चैत्र - बैसाख - ज्येष्ठ - आषाढ़ - श्रावण - भाद्रपद - अश्विन - कार्तिक - मार्गशीर्ष - पौष - माघ - फाल्गुन

Pre paid upto HP/48/SML (upto 31-12-2026) RNI NO. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

# मातृवन्दना

कार्तिक-मार्गशीर्ष, युगाब्द 5126,नवम्बर 2024

## स्वतंत्रता संग्राम के महानायक वजीर राम सिंह पठानिया

# विजयादशमी पर नागपुर उद्बोधन के कुछ मुख्य अंश

## रामराज्य सदृश वातावरण निर्माण करने के लिए प्रजा की गुणवत्ता व चारित्र्य तथा स्वधर्म पर दृढ़ता अनिवार्य

**प्रामाणिकता और निःस्वार्थ भावना से देश, धर्म, संस्कृति व समाज के हित में जीवन लगा देने वाली विभूतियों को हम इसलिए स्मरण करते हैं क्योंकि उन्होंने हम सबके हित में कार्य किया है तथा अपने स्वयं के जीवन से अनुकरणीय जीवन व्यवहार का उत्तम उदाहरण उपस्थित किया है।**

- **इस देश को एकात्म, सुख शान्तिमय, समृद्ध व बल संपन्न बनाना सबकी इच्छा है, सबका कर्तव्य भी है। इसमें हिन्दू समाज की जिम्मेवारी अधिक है।**
- **युवा पीढ़ी में जंगल में आग की तरह फैलने वाली नशीले पदार्थों की आदत भी समाज को अंदर से खोखला कर रही है। अच्छाई की ओर ले जाने वाले संस्कार पुनर्जीवित करने होंगे।**
- **हम सब मिलकर, हममें जो दुर्बल जाति अथवा वर्ग है, उनके हित साधन के लिए क्या कर सकते हैं? नियमित क्रम से ऐसा विचार एवं कृति होती रही तो समाज स्वस्थ भी बनेगा व सद्भाव का वातावरण भी बनेगा।**
- **पर्यावरण संतुलन हेतु हम सामान्य लोग अपने घर से तीन छोटी-छोटी सरल बातों का आचरण करते हुए प्रारम्भ कर सकते हैं। पहली बात है - जल का न्यूनतम आवश्यक उपयोग तथा वर्षा जल का संधारण। दूसरी बात है - प्लास्टिक वस्तुओं का उपयोग नहीं करना। तीसरी बात अपने घर से लेकर बाहर भी हरियाली बढ़े, वृक्ष लगें, अपने जंगलों के और परम्परा से लगाए जाने वाले वृक्ष सर्वत्र खड़े हों, इसकी चिंता करना।**
- **परिवार से प्राप्त पारस्परिक व्यवहार का अनुशासन, परस्पर व्यवहार में मांगल्य, सद्भावना और भद्रता तथा सामाजिक व्यवहार में देशभक्ति व समाज के प्रति आत्मीयता के साथ कानून संविधान का निर्दोष पालन, इन सबको मिलाकर व्यक्ति का व्यक्तिगत व राष्ट्रीय चारित्र्य बनता है।**

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

Pre paid upto HP/48/SML (upto 31-12-2026) RNI NO. HPHIN/2001/04280

# मातृवन्दना

वर्ष: 32 अंक : 11 हिन्दी मासिक, शिमला ( हिमाचल प्रदेश ), कार्तिक-मार्गशीर्ष, कलियुगाब्द 5126, नवम्बर 2024

**परामर्श**
डॉ. किस्मत कुमार
श्री संजय कुमार
श्री प्रताप समयाल
श्री मोतीलाल

**सम्पादक**
डॉ. दयानन्द शर्मा
98050 36545

**सह सम्पादक**
डॉ. कर्म सिंह

**सम्पादक मण्डल**
मीनाक्षी सूद, डॉ. उमेश मौदगिल,
डॉ. जय कर्ण, डॉ. सपना चंदेल,
हितेन्द्र शर्मा

**आवरण व अक्षर संयोजन**
राजेश शर्मा

**वितरण प्रमुख**
नरेन्द्र कुमार

**प्रकाशक / मुद्रक**
कमल सिंह सेन

**कार्यालय**
मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला, हि.प्र. 171 004
**दूरभाष :** 0177 - 2836990
**व्हाट्स ऐप :** 76500 00990
**ई-मेल :** matrivandanashimla@gmail.com

| | |
|---|---|
| मासिक शुल्क | ₹25 |
| वार्षिक शुल्क | ₹150 |
| आजीवन शुल्क | ₹1500 |

**वैधानिक सूचना :**
पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा

## इस अंक में...


| | | |
|---|---|---|
| संपादकीय | स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम महानायक... | 5 |
| चिन्तन | मनुष्य को स्वतंत्र बनाती है निर्भयता | 6 |
| प्रेरक प्रसंग | जीवन की शतरंज | 7 |
| आवरण | स्वतंत्रता आंदोलन के महानायक.. | 8 |
| महिला जगत् | मातृ देवो भव... | 12 |
| संगठनम् | सरसंघचालक डॉ. मनमोहन भागवत... | 13 |
| देवभूमि | कोर्ट निर्णय के बाद अवैध मस्जिद ... | 16 |
| लोक संस्कृति | आस्था, समर्पण और सामाजिक... | 17 |
| दीपावली | समता, स्वच्छता एवं समृद्धि... | 18 |
| स्वजागरण | सनातन धर्म और गाय का... | 21 |
| हिम फिल्मोत्सव | फिल्म उद्योग के लिए मील का पत्थर... | 22 |
| देश प्रदेश | मदरसे में चल रहा था जाली नोटों... | 24 |
| पुण्य जयंती | श्रीराम के दिव्य चरित के रचयिता | 25 |
| नवाचार | अखरोट की स्याही... | 26 |
| युवा पथ | कभी पेट भरने के लिए मांगी भीख | 28 |
| समसामयिकी | राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्थापना... | 29 |
| घूमती कलम | बांग्लादेश में दुर्गा पूजा पर प्रतिबंध... | 30 |
| कृषि | कृषि विभाग का मेरी पॉलिसी मेरे हाथ... | 31 |
| काव्य जगत् | तेरा वैभव अमर रहे मां | 32 |
| विश्व दर्शन | गाय के गोबर से जापान में चला जहाज... | 33 |
| ग्राम विकास | ग्राम विकास की दिशा में नई ऊर्जा | 34 |
| बाल जगत् | जब कुली बने टॉलस्टॉय... | 35 |


## अमृत वचन

**जब तक तुममें दूसरों के अवगुण ढूंढने, दूसरों के दोष देखने की आदत मौजूद है,
तब तक तुम्हारे लिए ईश्वर का साक्षात्कार करना कठिन है**
**---स्वामी रामतीर्थ**

# पाठकीय...

महोदय,

मातृवन्दना में पश्चिम बंगाल की शर्मनाक घटना पढ़कर बड़ा दु:ख हुआ। ना शर्म ना लिहाज ना ही इंसानियत। सब का मानो एक तरह से कत्ल सा हो गया हो / क्या कभी किसी बुरका पहनने वाली लड़की के साथ, गलत होता देखा या सुना है ?नहीं ना..... क्या कभी किसी ने हिन्दू धर्म अपनाया है ?बिना किसी मक़सद के, नहीं ना .....।

मैं यहां किसी भी धर्म पर ,विरोध करने के लिए नहीं लिख रही हूँ। बल्कि ! जो इंसानियत मर गई हैं, उस पर सवाल कर रहीं हूँ ?क्या कोई बताएगा ?ये कैसा प्यार हुआ भला ?

जो प्यार को प्रैशर कुकर में उबाल दे। या रास्ते में दस लोगों के सामने चाकू से, जान ले ले। या पैसे के पीछे कोई इतना पागल हो जाये कि शादी के कुछ दिन बाद ही उसे खुन से लथपथ करके जान से मार दे। कोई उन्हें समझाता क्यों नहीं, कि नारियों का अपमान न करो। इनके ही तो बल पर जग चलता है। पुरुष भी तो इनके ही कोख से जन्म लेकर, इनकी गोद में खेल कर बड़े होते हैं। पर जब किसी लड़की की बात आए ये दरिन्दे क्यों भूल जाते हैं कि उसके घर में भी माँ-बहन रहती है। क्या हाथ भी नहीं कंपकंपाते होंगे। अपनी पूरी मेहनत से डॉक्टर बनकर समाज की सेवा के लिए घर से एक कदम बाहर कि ओर उस लड़की ने निकाला ही था, दूसरों की पीड़ा को कम करने के लिए वो सफ़ेद कोट पहने जिसे भगवान का स्वरूप मानते हैं, रात भर ड्यूटी करने , घर से निकली थी पर किसने सोचा था कि अगली सुबह वो खुद खून से लिपटी एक सफेद कफन में होगी। .... जिस बाप ने मेहनत कर पढ़ाया होगा, उन्हीं के कन्धों पर उठी अर्थी होगी।

क्या बीती होगी उस बाप के कलेजे पर क्या सुनी होगीं वो चीखें एक माँ की किसी ने...

मामला अभी शांत भी नहीं हुआ था वहीं एक नर्स का मामला सामने आता दिखा जिसे दुनिया अस्पताल में सिस्टर जी कह कर बुलाते हैं, जो सफेद कोट पहने उन दरिंदों का बेरहमी से शिकार बनी।

वो दरिन्दे, एक माँ की कोख से पैदा नहीं हुए क्या ? कब तक ये सवाल आखिर सवाल ही रहेगा ?कब डरेंगे वो ऐसा कदम उठाने से ?

मैं उन लडकियों से और औरतों से यही विनती करती हूँ। तुम प्रेम हो,आस्था हो, विश्वास हो, टूटी हुई उम्मीदों की एक मात्र आस हो। किसी से इंसाफ की भीख न मांगों। यहां तुम्हें केवल तारीख पर तारीख मिलेगी। इंसान इंसानों को इंसाफ दिलवा ही नहीं सकता है।

इसलिए तुम्हें अकेले ही इस लड़ाई को लड़ना होगा। क्योंकि न तो ये द्वापर युग है और न ही गोविंद तुम्हें बचाने आयेंगे। माँ दुर्गा का रूप लेकर उन राक्षस का सँहार करना होगा। अब आवाज नहीं शस्त्र उठाकर प्रहार करना होगा। भीख माँग कर नहीं उन दरिंदों की चीखें सुन कर लोगों को भयभीत करना होगा। आओ एक जुट खड़े होकर, उन दरिंदों को सबक सिखाएं।

**हर्षिता चौहान**

**शिकायत व सुझाव** के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें

**0177-2836990 7650000990**

ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को दीपावली, तुलसी विवाह व गुरू नानक जयंती की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

## स्मरणीय दिवस नवम्बर 2024

| | |
|---|---|
| दीपावली, लक्ष्मी पूजन | 1 नवम्बर |
| तुलसी विवाह-गोवर्द्धन पूजा | 2 नवम्बर |
| भाईदूज, यम द्वितीय | 3 नवम्बर |
| विनायक चतुर्थी | 5 नवम्बर |
| छठ पूजा | 7 नवम्बर |
| गोपाष्टमी | 9 नवम्बर |
| बाल दिवस | 14 नवम्बर |
| गुरू नानक जयन्ती | 15 नवम्बर |

डॉ. दयानंद शर्मा
सम्पादक, मातृवन्दना

संपादकीय

# स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम महानायक वजीर राम सिंह पठानिया

भारत भूमि महान है। इसे वीर भूमि भी कहा जाता है। वैदिक एवं पौराणिक गाथाओं में अनेक ऐसे चक्रवर्ती राजाओं एवं शूरवीरों का उल्लेख है, जिन्होंने अपने शौर्य एवं पराक्रम से कई कीर्तिमान स्थापित किए, किंतु मध्यकाल में राजसत्ताओं के परस्पर संघर्ष से तथा राजाओं द्वारा विलासितापूर्ण जीवन अपनाने से भारत की संगठित शक्ति निरंतर क्षीण होती रही तथापि भारत अपने आध्यात्मिक बल तथा भौतिक समृद्धि से विश्व के आकर्षण का केंद्र बना रहा। आर्थिक रूप से संपन्न भारत पर विदेशी ताकतें आंखें जमाए बैठी थी। शक, हूण, मंगोल तुर्कों ने भारत की ओर कदम बढ़ाने शुरू कर दिए। सीमांत राजाओं को परास्त कर यहां अपने पैर पसारने में उन्हें ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी। 15वीं शताब्दी में मुगलों ने आक्रमण कर लगभग संपूर्ण भारत को अपना गुलाम बना डाला। इस अंतराल में भी महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी जैसे राजाओं ने मुगलों का डटकर सामना किया। उनकी दास्ता को स्वीकार न करते हुए अपनी राजसत्ताओं को अक्षुण्ण बनाए रखा। मुगलों की भारत पर पकड़ ढीली पड़ते ही यूरोपीय देश भारत की ओर उन्मुख हुए। डच-स्पेनिश तथा फ्रांसीसियों के बाद 16वीं शताब्दी में अंग्रेजों ने ईस्ट इंडिया कंपनी के नाम पर भारत में व्यापार के बहाने अपना वर्चस्व स्थापित करना शुरू कर दिया। कमजोर राज सत्ताओं को हस्त गत करते हुए बर्तानिया का अंग्रेजी राज शनैः-शनैः भारत को अपने आगोश में ले बैठा। हिंदू और मुस्लिम राज सत्ताओं में 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाकर अंग्रेजों ने 19वीं शताब्दी के मध्य तक भारत पर अपना शासन बनाए रखा। सन 1857 में अंग्रेजों के विरुद्ध पहला स्वतंत्रता संग्राम हुआ। झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई, नाना साहेब, तांत्या टोपे तथा मंगल पांडे जैसे सेना नायकों ने स्वतंत्रता की ऐसी चिंगारी भारतीयों में उत्पन्न की, जो उनके दिलों में आग बनकर भड़क उठी और 1947 को अंग्रेजों को देश से बाहर कर ही शांत हुई।

सन 1857 से पूर्व भी अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी गई, जिसमें अंग्रेजों की फौज को मुंह की खानी पड़ी। हिमाचल की पहाड़ी रियासतों के राजाओं तथा सेना नायकों ने युद्ध में अंग्रेजों का कई बार डटकर सामना किया। उनमें वीर शिरोमणि वजीर राम सिंह पठानिया का नाम उल्लेखनीय है। हिमाचल जिसे देवभूमि कहा जाता है यह वीरों की भी जन्मभूमि है। इस पर्वतीय भूमि पर आज तक ऐसे अमर वीर उत्पन्न होते रहे हैं, जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी हैं। वीर वजीर राम सिंह पठानिया ने 1857 की क्रांति में लगभग एक दशक पूर्व सन् 1848 में अंग्रेजी हुकूमत को ललकारा था। अतः उन्हें स्वतंत्रता संग्राम का प्रथम महानायक माना जाता है। हिमाचल की रियासत नूरपुर के वजीर राम सिंह के घर सन 1824 में जन्मे राम सिंह पठानिया बचपन से ही बड़े साहसी थे। छोटी उम्र में ही सन् 1848 में रियासत के वजीर का पद संभाला। राजा वीर सिंह की अचानक मृत्यु के पश्चात उनके 10 वर्षीय राजकुमार जसवंत सिंह को राजगद्दी पर बिठाया जाना था, किंतु अंग्रेजों के स्वीकार करने पर वजीर राम सिंह पठानिया ने उनके विरुद्ध विद्रोह का बिगुल बजा दिया। 14 अगस्त सन् 1848 को 500 राजपूत लड़ाकों को लेकर अंग्रेजों के अधीनस्थ शाहपुर कंडी दुर्ग पर आक्रमण कर दिया। अंग्रेजी फौज को खदेड़ कर वहां अपना झंडा लहरा दिया और साथ ही घोषणा कर दी कि नूरपुर रियासत अब अंग्रेजों के अधीन नहीं, स्वतंत्र है। यहां का राजा जसवंत सिंह है और मैं इस रियासत का वजीर हूं। अंग्रेज कहां चुप बैठने वाले थे, बड़े फौजी दस्ते को लेकर जालंधर के कमिश्नर हेनरी लॉरेंस और डिप्टी कमिश्नर कांगड़ा ने दुर्ग पर आक्रमण कर दिया। राम सिंह पठानिया ने डटकर मुकाबला किया, किंतु रसद के अभाव में उसे किला छोड़ना पड़ा, किंतु छापा मार लड़ाई आरंभ कर अंग्रेजों को भारी क्षति पहुंचाते रहे। पंजाब के रास्ते गुजरात पहुंचकर सिखों की सहायता से अपनी सेना संगठित कर पुनः शाहपुर कंडी दुर्ग पर हमला कर दिया। अधिकांश अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया, कुछ अपनी जान बचाकर भाग गए। पुनः दुर्ग जीतकर वीर पठानिया ने पड़ोसी रियासतों के राजाओं में उत्साह उत्पन्न कर दिया। उन्होंने अपनी-अपनी रियासतों के स्वतंत्र होने की घोषणा कर दी बहुत बड़ी फौज लेकर अंग्रेजों ने आक्रमण कर दिया। पहाड़ी राजाओं ने मिलकर अंग्रेजी सेना का मुकाबला किया, किंतु युद्ध नीति तथा कारगर हथियारों के अभाव में उन्हें पराजय का सामना करना पड़ा। परंतु वीर वजीर राम सिंह पठानिया ने अपना साहस नहीं छोड़ा। पुनः सिख राजा शेर सिंह से सहायता प्राप्त कर 'डल्ले की धार' पर अपना मोर्चा लगाया और मुकेसर के जंगल में अंग्रेजी सेना को घेर लिया। भीषण युद्ध हुआ। अपनी 25 सेर वजन की तलवार से उसने महारानी इंग्लैंड के निकट संबंधी रॉबर्ट पील के भतीजे जॉन पील और उसके साथियों के सिर धड़ से अलग कर दिए। 'डल्ले की धार' पर उकेरा गया शिलालेख इस महानायक के ऐतिहासिक युद्ध की याद दिलाता है। अंग्रेजों के षड्यंत्र से पकड़े गए वीर राम सिंह पठानिया को रंगून की जेल में भेज दिया गया था, जहां कड़ी यात्नाएं सहते हुए 11 नवंबर 1856 को वह शहीद हो गए। उनकी पुण्य स्मृति में इस वर्ष उनकी प्रतिमा नूरपुर में स्थापित की गई है, जिसका अनावरण महामहिम राज्यपाल द्वारा किया गया है। महान आत्माओं के लिए उम्र और समय की कोई सीमा नहीं होती और ना कोई बंधन। स्वल्प आयु में ही वह ऐसा विलक्षण कार्य कर देते हैं, जो सभी के लिए प्रेरणास्पद और अविस्मरणीय बन जाता है। आदि शंकराचार्य और स्वामी विवेकानंद इसके उदाहरण हैं। वीर वजीर राम सिंह पठानिया ने भी अल्पायु में ही अपनी वीरता का डंका बजाकर सदा के लिए अपना नाम अमर कर दिया है।

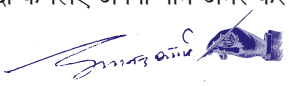

# मनुष्य को स्वतंत्र बनाती है निर्भयता

बल तो निर्भयता में है, शरीर में मांस बढ़ाने में नहीं। भगवान कृष्ण ने भी गीता में दैवी सत्ता का वर्णन करते हुए निर्भयता को सबसे पहले रखा है। निर्भयता ही वह शक्ति है जो मनुष्य को आत्म बल प्रदान करती है। स्वतंत्रता से शक्ति का विकास होता है। निर्भयता मनुष्य के प्राण को स्वतंत्र बनाती है, इसलिए उसे ऐसी शक्ति कहा जा सकता है, जो जीवन में एक नवसफूर्ति ला देती है। निर्भयता ही वह तत्व है, जो हमारी सोई शक्ति को जगा देता है। निर्भयता ही हमारा जीवन सबल, स्वावलंबी और सफल बनाती है। इसके विपरीत भय वह आसुरी तत्व है, जो हमारी जीवन यात्रा में जगह-जगह बाधा बनता है।

एक बार दुश्मन के जोरदार हमले के कारण नेपोलियन की सेना पीछे हटने लगी। सभी सैनिक अपनी जान बचाते हुए पीछे हटने लगे। तभी एक सैनिक अधिकारी नेपोलियन के पास पहुँचा और बोला-हम तो हार गए। उसकी बात सुनकर नेपोलियन ने जवाब दिया-तुम ही हारे हो, सेना नहीं हारी है। और इतना कहने के बाद नेपोलियन ने सेना की कमान खुद संभाल ली। अपने सेनापति को आगे बढ़ते हुए देखकर सैनिकों का फिर से हौसला बढ़ गया और वे युद्ध के मैदान में डट गए। नेपोलियन अगर निर्भीक और साहसी न होता तो वह युद्ध न जीत पाता। भय हमारी शारीरिक और मानसिक शक्तियों का क्षय करता है। भय से खून सूखने लगता है। मन दुखी, चिंतित और व्याकुल रहता है। भय से आत्मा निर्बल होती है और इसी से मनुष्य बुरे कर्मों की ओर प्रवृत्त होता है। बुरे कर्मों और पापों का कारण दुर्बलता ही है और यह दुर्बलता भय से ही आती है। भय से ही हिंसा की प्रवृत्ति पनपती है। कहते हैं, यदि जंगल में किसी मनुष्य को बाघ दिख जाए और वह उससे डरे बिना अपने रास्ते पर बढ़ता जाए; तो बाघ उस पर हमला नहीं करता। यदि मनुष्य उस पर हमला करता है, तो ही वह पलटकर हमला करता है। यानि मनुष्य को बाघ से भय रहता है और बाघ को मनुष्य से। यह भय ही दोनों जीवों को हिंसा के लिए प्रेरित करता है। इसलिए हमें ऐसी तामसी शक्तियों से परहेज करना चाहिए, जो हमें शारीरिक और मानसिक रूप से दुर्बल बनाती है। स्वामी रामतीर्थ तो वन में निर्भयता के साथ रहते थे और कहते थे कि मुझे किसी जीव का भय नहीं है, मैं तो निर्भय होकर विचरण करता हूं। ऐसे ही, एक बार स्वामी दयानन्द एक नदी के किनारे पानी में पैर लटकाए बैठे थे। तभी एक कछुआ आ गया। स्वामी जी के पास बैठे व्यक्ति ने कहा-स्वामी जी पैर निकाल लीजिए, वरना कछुआ काट लेगा। इस पर स्वामी जी बोले- जब मैं इसे कोई हानि नही पहुंचा रहा, तो भला यह मुझे क्यों काटेगा? स्वामीजी पानी में पैर डाले बैठे रहे और कछुआ पास से गुजर गया। वैसे तो भूत होते नहीं है, लेकिन फिर भी जंगल में या अकेले में इन्सान अपने मन-मस्तिष्क में भूत की कल्पना कर उससे भयभीत हो जाए और जब उसकी यह कल्पना उसे भयभीत करे, तो वही वास्तविकता हो जाती है कि मैंने भूत देखा। इसलिए निर्भीक बनें। ◆◆◆

## निर्भयता का अमृत पान करें

**जो मनुष्य अपने को शरीर-भाव से ऊंचा उठा लेता है, आत्मबल और निर्भयता का अमृत पान कर लेता है, वह किसी से भयभीत नहीं होता। ऐसे लोग विपत्तियों का सामना बड़ी आसानी से कर लेते हैं। ऐसे लोग अपने हितों के लिए झूठ, कपट, बेईमानी का सहारा नहीं लेते। जो व्यक्ति आत्मा की अमरता का विचार रखता है, वह हर तरह के भय से मुक्त हो जाता है।**

# जीवन की शतरंज

एक दिन, एक कंपनी में साक्षात्कार के दौरान, बॉस, ने सामने बैठी महिला से पूछा, 'आप इस नौकरी के लिए कितनी तनख्वाह की उम्मीद करती हैं?'

महिला ने बिना किसी झिझक के आत्मविश्वास से कहा, 'कम से कम एक लाख रुपये।'

बॉस ने उसकी ओर देखा और आगे पूछा, 'आपको किसी खेल में दिलचस्पी है?'

महिला ने जवाब दिया, 'जी, मुझे शतरंज खेलना पसंद है।'

मालिक ने मुस्कुराते हुए कहा, 'शतरंज बहुत ही दिलचस्प खेल है। चलिए, इस बारे में बात करते हैं। आपको शतरंज का कौन सा मोहरा सबसे %यादा पसंद है? या आप किस मोहरे से सबसे अधिक प्रभावित हैं?'

महिला ने मुस्कुराते हुए कहा, 'वज़ीर।'

मालिक ने उत्सुकता से पूछा, 'क्यों? जबकि मुझे लगता है कि घोड़े की चाल सबसे अनोखी होती है।'

महिला ने गंभीरता से जवाब दिया, 'वास्तव में घोड़े की चाल दिलचस्प होती है, लेकिन वज़ीर में वो सभी गुण होते हैं जो बाकी मोहरों में अलग-अलग रूप से पाए जाते हैं। वह कभी मोहरे की तरह एक कदम बढ़ाकर राजा को बचाता है, तो कभी तिरछा चलकर हैरान करता है, और कभी ढाल बनकर राजा की रक्षा करता है।'

मालिक ने उसकी समझ से प्रभावित होते हुए पूछा, 'बहुत दिलचस्प! लेकिन राजा के बारे में आपकी क्या राय है?'

महिला ने तुरंत जवाब दिया, 'सर! मैं राजा को शतरंज के खेल में सबसे कमजोर मानती हूँ। वह खुद को बचाने के लिए केवल एक ही कदम उठा सकता है, जबकि वज़ीर उसकी हर दिशा से रक्षा कर सकता है।'

मालिक महिला के जवाब से प्रभावित हुआ और बोला, 'बहुत शानदार! बेहतरीन जवाब। अब ये बताइए कि आप खुद को इनमें से किस मोहरे की तरह मानती हैं?'

महिला ने बिना किसी देर के जवाब दिया, 'राजा।'

मालिक थोड़ी हैरानी में पड़ गया और बोला, 'लेकिन आपने तो राजा को कमजोर और सीमित बताया है, जो हमेशा वज़ीर की मदद का इंतजार करता है। फिर आप क्यों खुद को राजा मानती हैं?'

महिला ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, 'जी हाँ, मैं राजा हूँ और मेरा वज़ीर मेरा पति था। वह हमेशा मेरी रक्षा मुझसे बढ़कर करता था, हर मुश्किल में मेरा साथ देता था, लेकिन अब वह इस दुनिया में नहीं है।'

मालिक को यह सुनकर थोड़ा धक्का लगा, और उसने गंभीरता से पूछा, 'तो आप यह नौकरी क्यों करना चाहती हैं?'

महिला की आवाज भर्राई, उसकी आँखें नम हो गईं। उसने गहरी सांस लेते हुए कहा, 'क्योंकि मेरा वज़ीर अब इस दुनिया में नहीं रहा। अब मुझे खुद वज़ीर बनकर अपने ब%चों और अपने जीवन की जिम्मेदारी उठानी है।'

यह सुनकर आफिस में एक गहरी खामोशी छा गई। मालिक ने तालियाँ बजाते हुए कहा, 'बहुत बढ़िया, सीमा। आप एक सशक्त महिला हैं।'

वास्तव में एक महिला किसी भी तरह की मुश्किलों का सामना कर सकती हैं। अगर कभी उन्हें कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़े, तो वे खुद वज़ीर बनकर अपने और अपने परिवार के लिए एक मजबूत ढाल बन सकें। एक बेहतरीन पत्नी वह होती है जो अपने पति की मौजूदगी में एक आदर्श औरत हो, और पति की गैर मौजूदगी में वह मर्द की तरह परिवार का बोझ उठा सके। जीवन में परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, अगर आत्मविश्वास और समझदारी हो, तो कोई भी मुश्किल हालात को पार किया जा सकता है। इसके लिए महिलाओं में शिक्षा, समझ-बूझ और चुनौतियों का सामना करने के लिए फौलादी इरादा होना जरूरी है। ◆◆◆

# स्वतंत्रता आंदोलन के महानायक वजीर राम सिंह पठानिया

डा. कर्म सिंह
सह संपादक मातृवन्दना

**माता भूमि पुत्रो अहं पृथिव्याः।** भूमि मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूं। भारतीयों के लिए वेद का यह उपदेश मातृभूमि के प्रति सम्मान और समर्पण की भावना का जीवंत प्रतीक है। मातृभूमि की सेवा के प्रति राष्ट्रवाद के इसी चिंतन को अपने हृदय में स्थापित करते हुए भारत माता के असंख्य वीर सपूतों ने मातृभूमि की परतंत्रता की जंजीरों को काटने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। इस पावन धरा के यशस्वी वीरपुत्रों में एक चमकता सितारा है वर्तमान हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिला के नूरपुर में जन्मे राम सिंह पठानिया । वजीर राम सिंह पठानिया का जन्म 10 अप्रैल 1924 को कांगड़ा जिला के नूरपुर गांव के बासा वजीरां में चंद्रवंशी तोमर वंश में हुआ। इनके पिता शाम सिंह पठानिया नूरपुर रियासत के राजा के वजीर थे और माता इंदौरी देवी सियालकोट के वरमांगा गांव के हरिचंद राजपूत की बेटी थी।

यह भारत की पराधीनता का काल था। पहले मुगलों की लूटपाट और फिर अंग्रेजों का दमनकारी चक्र। 19वीं शताब्दी में अंग्रेजों के कूटनीतिक एवं दमनकारी शासन के विरोध में भारतीय जनमानस अंगड़ाई लेने लगा था। 1857 की क्रांति भले ही अंग्रेजों को समूल उखाड़ फेंकने में नाकाम रही हो परंतु अंग्रेजों के विरोध में सशस्त्र क्रांति से असंख्य राष्ट्रप्रेमी युवाओं के मन में स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध आंदोलन भड़क उठा । यही युवा शक्ति क्रांतिकारियों के रूप में भारत की आजादी के लिए निर्णायक साबित हुई। उस समय देसी रियासतों के आपसी संघर्ष और जागीरदारों की जगीरो को छीनने के संक्रमण काल में वजीर राम सिंह पठानिया ने अंग्रेजी सत्ता को चुनौती देकर अपने वंश के शौर्यपूर्ण इतिहास को कायम रखते हुए स्वतंत्रता आंदोलन को शिखर पर पहुंचाते हुए शौर्य एवं वीरता का एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। महाराजा रणजीत सिंह की विस्तारवादी नीति ने पहाड़ी राज्यों एवं रियासतों को अपने कब्जे में कर लिया। महाराजा रणजीत सिंह ने अपने अधीन पहाड़ी रियासतों के राजाओं को 1915 ईस्वी में सियालकोट बुलाया। जिसमें नूरपुर के शामिल न होने पर चालीस हजार रूपए का भारी जुर्माना लगाया गया । पुन: 10 फरवरी 1916 ई को सिख सी ने नूरपुर किले पर अधिकार कर लिया और राजा वीर सिंह को पहले अपने ससुराल चंबा रियासत में और बाद में बाघल रियासत की राजधानी अर्की में शरण लेनी पड़ी। लगभग 10 वर्षों के बाद सन् 1826 में उन्होंने अपने कूछ विश्वत दरबारीगण एवं कर्मचारियों के सहयोग से नूरपुर किले की घेराबंदी कर दी। सिखों ने शाम सिंह की जागीर जप्त कर ली और अल्प वयस्क बेटे राम सिंह को कश्मीर के तत्कालीन गवर्नर दीवान किरपा राम के संरक्षण में भेज दिया। बाद में 3500 रुपए की वार्षिक जागीर वजीर शाम सिंह को मिल गई। 27 जून 1839 को महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के उपरांत लाहौर दरबार अव्यवस्थित हो गया। 9 मार्च 1846 को लाहौर संधि के अंतर्गत सतलुज एवं रावी नदी के मध्य क्षेत्र पर ईस्ट इंडिया कंपनी का कब्जा हो गया।

अंग्रेजों ने वजीर राम सिंह पठानिया को परेशान करने के लिए कई तरह के षड्यंत्र रचे और उन्हें जागीर तथा सहायता देने से मना कर दिया। जिसके विरोध में वजीर राम सिंह पठानिया ने अंग्रेजी सत्ता का विरोध करने का दृढ निश्चय कर लिया।

युवा राम सिंह ने जसरोटा रियासत में गुप्त रूप से राष्ट्रवादी युवकों को संगठित करके 15 अगस्त 1848 को

शाहपुर कंडी के किले पर ढाबा बोलकर अपने अधिकार में कर लिया और 16 अगस्त 1848 को किले पर नूरपुर रियासत का केसरिया ध्वज फहराकर राजकुमार जसवंत सिंह का राजतिलक करके नूरपुर रियासत का राजा घोषित कर दिया तथा स्वयं वजीर बनकर ब्रिटिश शासको को सीधी चुनौती दे डाली। इससे अंग्रेज तिलमिला उठे उन्होंने वजीर सुचेत सिंह को राजकुमार का संरक्षक बनाकर बनाकर जसवंत सिंह कोज़5000 और उनकी माता कोज़2000 वार्षिक पेंशन लेने के लिए मजबूर कर दिया इसके बाद वजीर राम सिंह पठानिया ने अंग्रेजों के विरुद्ध गोरिल्ला युद्ध प्रणाली को अपनाया। अंग्रेजों ने सितंबर 1848 को मेजर हडसन के नेतृत्व में प्रथम सिख इंफिनिटी के 800 सैनिकों द्वारा राम सिंह पठानिया और उनके सहयोगियों पर आक्रमण कर दिया परंतु राम सिंह कुशलता से अपने साथियों सहित उनको चकमा देकर वहां से निकल गए। वजीर राम सिंह पठानिया ने पड़ोसी रियासतों के शासकों के साथ संपर्क बनाकर मातृभूमि की स्वाधीनता हेतु संगठित होकर लड़ने का आह्वान किया।

यद्यपि उन्हें यद्यपि उन्हें अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए वांछित सहयोग नहीं मिला परंतु वह फिर भी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए डटे रहे। बहुत प्रयास करने के बाद कुछ सहयोगी होकर क्रांति के लिए सहमत हो गए इससे उत्साहित होकर वजीर राम सिंह पठानिया सिख सैनिकों एवं अपने सहयोगियों के साथ शाहपुर कंडी क्षेत्र में आ धमके।

वजीर राम सिंह पठानिया ने अपने युद्ध कौशल संगठन संचालन और राष्ट्रभक्ति की प्रचंड आज से अंग्रेजी शासन को झुलसना जारी रखा। अंग्रेजों ने जालंधर फील्ड फोर्स तथा पंजाब डिवीजन के कमांडिंग अफसर जनरल ब्रिगेडियर व्हीकल को वजीर राम सिंह पठानिया के सैनिक सेवक पर आक्रमण करने के आदेश दिए और पठानकोट में अस्थाई कैंप लगाया। 16 जनवरी 1849 को अंग्रेजी सी ने माधोपुर से राम सिंह पठानिया के ईश्वर की और कुछ किया भयंकर युद्ध हुआ जिसमें लगभग डेट दर्जन राजपूत युवक मातृभूमि की रक्षा के लिए वीरगति को प्राप्त हुए दूसरी ओर अंग्रेजी सेवा का भी काफी नुकसान करने में सफल रहे। 17 जनवरी 1849 को लेफ्टिनेंट जॉन पाल मारा गया। इसके बाद अंग्रेजों ने राम सिंह पठानिया को जीवित या मृत लाने वाले व्यक्ति को 2000 रुपए इनाम की घोषणा कर दी। परंतु राम सिंह पठानिया अपना बचाव करते हुए जम्मू कश्मीर राज्य की सीमा में प्रवेश कर गए अंग्रेजों ने हताश होकर बादशाह वजीर में उनके घर को आग लगा दी और परिवार जनों को भी प्रताड़ित किया। कुछ समय तक युद्ध को स्थगित रखते हुए वजीर राम सिंह पठानिया ने अपने सहयोगियों को घरों को जाने की इजाजत दे दी और खुद सन्यासी का वेश धारण करके अंग्रेज सेवा की गतिविधियों को की जानकारी लेनी शुरू कर दी। फरवरी 1949 ईस्वी में ब्रिटिश सी ने जसरोटा रियासत के एक गांव में पूजा अर्चना करते हुए निहत्थे शूरवीर राम सिंह पठानिया को इतिहास में हिरासत में लेने की कोशिश की तो उन्होंने स्पष्ट कहा कि वे आत्मसमर्पण नहीं करेंगे उन्हें हजार लेकर युद्ध करने का मौका दिया जाए परंतु अंग्रेजों ने हथियार देना स्वीकार नहीं किया। राम सिंह पठानिया ने पूजा के लोटे से ही प्रहार करके दो अंग्रेज सैनिकों को मौके पर ही मार गिराया। अंततः वजीर राम सिंह पठानिया को हिरासत में ले लिया गया।

वजीर राम सिंह पठानिया को हिरासत में लेने के बाद आम जनता में उनकी लोकप्रियता को बट्टा लगाने की खातिर उन्हें पालकी में बिठाकर नूरपुर में लाया गया। अपने बहादुर बेटे को शत्रु अंग्रेजों की हिरासत में देखकर पिता और परिवारजन काफी भावुक हो गए। इस दृश्य को लोक गाथा में इस तरह पिरोया गया है –

**करम लिखेया सो मैंपाया बापू।**
**मेरे मिसराई ने दगा कमाया बापू।**
**जिंदिया लैंदान कौन मेरा नाम बापू मर्दां दे बोल रंहदे**
**मर्दां दे नाल बापू।।**
**जंग लडदे ने माईयां दे लाल बापू।।**

यह वीर पिता की अपने वीर पुत्र के साथ अंतिम मुलाकात थी। क्योंकि नूरपुर किले से ले जाकर वजीर राम सिंह पठानिया को कांगड़ा के किले में नजर बंद कर दिया गया था। 21 अप्रैल 1849 को धर्मशाला के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट जी सी वारेन की अदालत में उन्हें मृत्युदंड की सजा सुना दी गई लेकिन बोर्ड ऑफ़ एडमिनिस्ट्रेशन पंजाब के हस्तक्षेप से गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी ने कमिश्नर ट्रांस सतलुज डी एच मैकलोड़ की

सिफारिश पर गवर्नर जनरल के कार्यालय पत्र संख्या 1969 दिनांक 11 अक्टूबर 1849 के अनुसार वजीर राम सिंह पठानिया की सजा मृत्यु दंड की बजाय आजीवन कारावास में बदल दी गई थी। आजीवन कारावास की सजा में रंगून की भारटावायन प्रोविश की मॉमौलमियन नामक जेल में कई वर्षों तक अमानवीय यातनाएं सहते हुए 11 नवंबर 1856 के दिन अपनी मातृभूमि से हजारों मील दूर इस संसार को अलविदा कहते हुए वजीर राम सिंह पठानिया ने शहादत दी। शहीद शिरोमणि वजीर राम सिंह पठानिया की स्मृति में आज भी हर साल 16 अगस्त को पठानकोट के समीप धार ब्लॉक में डल्ले की धार गांव में मेले के दौरान उनकी उनकी विजय और राजतिलक समारोह की याद में शौर्य गाथा गाई जाती है –

*शाम सिंहे दे घर राम सिंह जन्मेया,*
*जम्मेया कोई बलकार राजा।*
*जिनी जमदे लई तलवार राजा,*
*कोई किल्हा पठाणिया खूब लडेया।*
*डल्ले दिया धारा डफ्फले बजदे,*
*कुम्मणी वजन तंबूर राजा।*
*बुक्कां बुक्कां दारु जे बंडदा, टोकरुंआ बंडदा तीर राजा।*
*चंडी तेरी शमशीर राजा, कोई बेटा बजीरे दा खूब लाडेया।*
*मेकी लडना दे गोरेयां नाल राजा,*
*मैं लडना फिरंगियां नाल राजा।*
*गोरे कढणे देसा ते बाहर राजा*
*कोई बेटा बजीरे दा खूब लडेया।*
*लिखी परवाने राजेया की भेजदा,*
*तुसां करणा जुगां दा राज राजा।*
*असां रखणी कुले दी लाज राजा,*
*कोई बेटा बजीरे दा खूब लडेया।*
*तूं जे लडाई बिच कुम्मणी जे कीती ए,*
*लहुए दे बगी गए हाड राजा।*
*लडी ने गोरेया जो पिच्छें नहठाया*
*कोई बेटा बजीरे दा खूब लडेया।*
*इक्की फट्टें अंग्रेज चार मारे,*
*तूं लेया पूरा हसाब राजा,*
*राजे दा अपणे सन्मान रखेया*
*कोई बेटा बजीरे दा खूब लडेया।*
*ओथे हारिया बहीलर साहब,*
*मारिया जाहन पील राजा।*
*अंगरेजां जो ठोकी दित्ती कील राजा*
*कोई किल्हा पठाणिया खूब लडिया।*
*छल करी अंगरेजा जे पकडेया,*
*ले जाई पुजाया रंगून राजा।*
*जेला बिच्चे शहादत जे पाई*
*कोई बेटा बजीरे दा खूब लडेया।*

वजीर राम सिंह की वीरता की अमर कथा उनके यश को चारों दिशाओं में गूंजायमन कर रही है। हाल ही में नूरपुर में वजीर राम सिंह पठानिया की मूर्ति स्थापित करके उन्हें स्मरण करते हुए सम्मान प्रदान किया गया है जो कि उनके शहादत और मातृभूमि के प्रति उनके उत्कट प्रेम का प्रत्यक्ष एव जीवंत उदाहरण है। वजीर राम सिंह पठानिया ने जिस प्रकार तप, त्याग संघर्ष करते हुए मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए अमर बलिदान दिया और अंग्रेजों का मुकाबला करते हुए अगणित कष्टों को सहन करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए वह आने वाली पीढियां के लिए हमेशा आदर्श बना रहेगा।

कृतज्ञ राष्ट्र उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता है। वस्तुत इन वीर शहीदों के बलिदानों से ही यह देश आजाद हुआ और इन्हीं की शहादत के बलबूते आज भारत का लोकमानस आजादी की खुली हवा में सांस ले रहा है। अतः इन क्रांतिकारी शहीदों को आदर सहित स्मरण करते हुए हमें भी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिज्ञाबद्ध होकर अपने-अपने कर्तव्य के निर्वहन का संकल्प करना चाहिए। आज भी अनेक सामाजिक और राष्ट्रीय चुनौतियां वीरता एवं शौर्यपूर्ण कर्तव्य की राह देख रही है।◆◆◆

# वीर शिरोमणि वजीर राम सिंह पठानिया की प्रतिमा का अनावरण

नूरपुर में वजीर राम सिंह पठानिया स्मारक समिति द्वारा एक भव्य कार्यक्रम आयोजित कर महान स्वतंत्रता सेनानी और वीर शिरोमणि वजीर राम सिंह पठानिया की प्रतिमा का अनावरण किया गया। अनावरण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे महामहिम राज्यपाल श्रीमान शिव प्रताप शिव शुक्ल जी द्वारा विधिवत् प्रतिमा का अनावरण किया गया। प्रतिमा आवरण के उपरांत वजीर राम सिंह पठानिया स्मारक स्थल पर एक जनसभा का भी आयोजन किया गया, जिसमें आदरणीय इंद्रेश जी मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अध्यक्षता सीमा तटरक्षक बल के रिटायर्ड महानिदेशक श्री वीरेंद्र पठनिया जी ने की। इस उपलक्ष पर उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए आदरणीय इंद्रेश कुमार जी ने कहा की वजीर राम सिंह पठानिया एक महान योद्धा थे और क्षेत्रवासियों को नहीं अपितु पूरे भारत वर्ष को उन पर गर्व होना चाहिए उन्होंने कहा यह जननी जन्मभूमि स्वर्ग से भी प्यारी होती है और उस पर प्राण निछावर करने वालों में श्री राम सिंह पठानिया जी भी एक महान योद्धा थे जिन्होंने अपनी मातृ भूमि पर अंग्रेजों के नापाक कदम ना पड़ सके इसके लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री वीरेंद्र सिंह पठानीया जी ने कहा कि उनके लिए सौभाग्य की बात की उन्हें इस ऐतिहासिक महत्व के कार्यक्रम और महान सपूत बजीर राम सिंह पठानिया की प्रतिमा के अनावरण के समारोह के अध्यक्ष के रूप में रहने का अवसर प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि वह स्मारक समिति के आभारी हैं जिन्होंने इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में अध्यक्ष के रूप में रहने का अवसर प्रदान किया।

समारोह के मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल आदरणीय शिव प्रताप शुक्ला जी ने उपस्थित प्रबुद्ध जनों को संबोधित करते हुए कहा कि वह भी गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं कि एक महान योद्धा की प्रतिमा अनावरण के समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में रहने का उनको अवसर मिल रहा है। उन्होंने कहा एक छोटी सी आयु में अंग्रेजों से लोहा लेते हुए अपने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले वीर योद्धा की जीवन कथा को समस्त देशवासियों को याद रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि जिन भी लोगों ने महान कार्य किए हैं उन में से बहुत से छोटी आयु में ही छोड़कर भगवान को प्यारे हुए हैं। उन्होंने आदि शंकराचार्य, स्वामी विवेकानंद इत्यादि का उदाहरण देते हुए कहा की उन्होंने छोटी आयु में ही महान कार्य किए हैं। उन्होंने कहा कि भारत की संस्कृति त्याग की संस्कृति है इसीलिए भारत को दुनिया के बाकी देश यूं ही विश्व गुरु नहीं कहते हैं। इस देश में कोई संस्कार है, जिसके कारण भारत विश्व गुरु के रूप में विश्व में स्थापित है।

अंत में समिति के अध्यक्ष ठाकुर वीर सिंह ने विशिष्ट अथितियों और सभागार में उपस्थित आए अतिथियों का धन्यवाद किया जिन्होंने समारोह में शामिल होकर समारोह की भव्यता को बढ़ाया।

इससे पूर्व मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल आदरणीय शिव प्रताप शुक्ल जी मुख्य वक्ता श्रीमान इंद्रेश कुमार जी, कार्यक्रम के अध्यक्ष वीरेंद्र पठानिया जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय प्रांत संघचालक श्रीमान अशोक जी को समिति पदाधिकारियों द्वारा शाल, टोपी और वजीर राम सिंह पठानीयाजी का स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस उपलक्ष्य पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत कार्यवाह श्रीमान् किस्मत कुमार जी, सह प्रांत प्रचारक श्रीमान ओम प्रकाश जी, उत्तर क्षेत्र और राजस्थान क्षेत्र के आरोग्य भारती संयोजक श्रीमान संजीवन, कांगड़ा चंबा सांसद डॉ राजीव भारद्वाज, राज्यसभा सांसद इंदु गोस्वामी,स्थानीय विधायक रणवीर सिंह, विधायक हंसराज, विधायक जनक राज, पूर्व मंत्री राकेश पठानिया, पूर्व सांसद किशन कपूर, पूर्व विधायक राजेश ठाकुर, पूर्व विधायक अर्जुन ठाकुर, जियालाल ठाकुर विभिन्न संस्थाओं के सभाओं के प्रतिनिधि और क्षेत्र के अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहे।

# मातृ देवो भव

– डॉ. सपना चंदेल

आज सुबह जैसे ही मोबाइल खोल, सोशल मीडिया पर मदर्स डे के बहुत सारे चित्र और शुभकामना संदेश वायरल हो रहे थे। कोई चम्मच से मां को पानी पिलाने की फोटो शेयर कर रहा था। कोई खुद के बचपन की फोटो दिखाकर मां की गोदी में खेलने की यादें ताजा कर रहा था। कहीं, मां बच्ची की कंघी करते हुए चुटिया बना रही है। कहीं मां किसी को प्यार दुलार से खिला रही है। कोई बच्चा मनपसंद चीज न मिलने पर मां से नाराज़ हैं, रोता हुआ दिख रहा है। फेसबुक व्हाट्सएप यूट्यूब इंस्टाग्राम सब कुछ मां की ममता से भरा पड़ा है। इन चित्रों को शुभकामनाओं के संदेशों को देखकर यह लगता है कि लोग मां का बहुत सम्मान करते हैं। मां के खानपान का खूब ध्यान रखा जा रहा है। मां को उसकी मनपसंद की चीजें भेंट में दी जा रही हैं। बेटे बेटियां सभी मां के इर्द-गिर्द घूम रहे हैं।

अगर यह सब सच है तो वृद्ध आश्रम में किसकी मां है? सडक़ों पर भीख मांगती, मंदिर के सामने कटोरा लेकर बैठी महिला , दो वक्त की रोटी के लिए दर-दर भटकती महिला भी तो किसी की मां है? लेकिन सोशल मीडिया पर कहीं उसकी चर्चा नहीं होती। मां दादी, नानी, चाची, मौसी ,बहन, जेठानी, देवरानी बिटिया बहुत सारे रूपों में सब पर ममता लुटाती है। सृष्टि की रचना से लेकर पालन पोषण तक वह अपना वात्सल्य उड़ेलती है। खुद भूखी रहती है, परिवार को खिलाती है, खुद गीले में सोती है, बच्चों को सूखे बिस्तर पर सुलाती है। खुद फटा पुराना कपड़ा पहनकर जीवन बसर करती है, परंतु बच्चों को हमेशा सज धज कर जीवन जीने के लिए अपनी ममता बांटती है। यह भी सत्य है कि पुरुष प्रधान समाज में नारी का शोषण तो होता है। कहीं पत्नी के रूप में, कहीं बहू के रूप में, कहीं बिटिया के रूप में, तो कहीं मां के रूप में भी। अगर सामाजिक कुरीतियों की ओर देखें तो दहेज लेना, बहू के साथ बुरा व्यवहार करना, उसे जलाना, प्रताड़ित करना यह सब भी तो सास और ननद ही पुरुष के साथ मिलकर कर रही है। जेठानी देवरानी की अनबन से संयुक्त परिवारों का टूटना, यह सब भी तो महिलाओं की भागीदारी से हो रहा है। लेकिन इसके विपरीत समाज में असंख्य ऐसे उदाहरण भी दिखाते हैं जिसमें अन्नपूर्णा मां वात्सल्य भाव से समर्पित होकर परिवार का संरक्षण, पालन पोषण करती है और बेटे बेटियां, बहुएं अपनी मां एवं सास की सेवा और सम्मान भी करती हैं, यही हमारा आदर्श होना चाहिए। **हिंदू समाज में जीवित माता-पिता के साथ लड़ाई झगड़े के लिए कोई स्थान नहीं है फिर भी प्राय यह भी देखा जाता है कि जीते जी माता-पिता के साथ कहीं-कहीं अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता है। उनकी संपत्ति पर हक जताकर उसे भोगा तो जाता है परंतु उस संपत्ति को अपना जीवन खपाकर अर्जित करने वाले माता-पिता का उचित सम्मान नहीं होता है। फिर यही बेटे बेटियां, बहुएं दामाद उनके मरने के बाद आंसू बहाते हैं। उनकी स्मृति में मासिक, वार्षिक, चतुर्वार्षिक श्राद्ध और भागवत की कथाएं आयोजित की जाती हैं जिसमें उनकी आत्मा की शांति सद्गति और मुक्ति के लिए काफी धन खर्च किया जाता है। इसमें अब दिखावा अधिक होने लगा है। यह आत्म चिंतन का विषय है कि मृत्यु के बाद के रिवाजों को निभाते हुए भी हमें जीवित माता-पिता की सेवा करनी चाहिए।**

वस्तुत: मदर्स डे हिंदू संस्कृति में कोई महत्व नहीं रखता है क्योंकि हमारी संस्कृति में मातृदेवो भव,पितृदेवो भव कहकर माता और पिता को देवता के बराबर समान स्थान दिया गया है। उन्हें भोजन वस्त्र और अन्य सुख सुविधाओं से तृप्त करने का उपदेश देती है। यह हिंदू धर्म संस्कृति में दिनचर्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो पितृयज्ञ के रूप में पांच महायज्ञों में शामिल है।

**मदर्स डे यूरोप एवं पाश्चात्य संस्कृति का हिस्सा है जहां मां बच्चों को जन्म देकर छोड़ देती है। उसका पालन पोषण शिक्षा सरकार द्वारा की जाती है। बच्चा बड़ा होने पर जब अपने माता पिता से मिलता है तब तक वे दूसरी शादी कर चुके होते हैं। ऐसे में उन्हें जरूरत रहती है मदर्स डे और फ़ादर्स डे मनाने की ताकि वह बच्चा अपनी मां के साथ मिल सके,अपने पिता को पहचान सके जबकि भारतीय संस्कृति में मां और संतान का संबंध जीवन भर बना रहता है। यहां हर दिन मदर्स डे और फ़ादर्स डे होता है। हर दिन माता-पिता का वात्सल्य, उनकी डांट फटकार, उपदेश और वात्सल्य तथा आशीर्वाद का प्रसाद मिलता है।**

**दिनांक 12 अक्तूबर, 2024 को नागपुर में आयोजित श्री विजयादशमी उत्सव के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी द्वारा दिये गए उद्बोधन के महत्वपूर्ण बिन्दु। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के पूर्व अध्यक्ष डॉ. कोपिल्लिल राधाकृष्णन जी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे।**

### मातृशक्ति के कर्तृत्व व नेतृत्व की दैदीप्यमान परंपरा का उज्ज्वल प्रतीक

इस वर्ष पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होलकर जी की 300वीं जन्मशती मनायी जा रही है। देवी अहिल्याबाई एक कुशल राज्य प्रशासक, प्रजाहितदक्ष कर्तव्यपरायण शासक, धर्म संस्कृति व देश की अभिमानी, शीलसंपन्नता का उत्तम आदर्श तथा रण-नीति की उत्कृष्ट समझ रखने वाली राज्यकर्ता थीं। अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में भी अद्भुत क्षमता का परिचय देते हुए घर को, राज्य को, स्वयं की अखिल भारतीय दृष्टि के कारण अपनी राज्य सीमा के बाहर भी तीर्थ क्षेत्रों के जीर्णोद्धार व देवस्थानों के निर्माण द्वारा समाज के सामरस्य को तथा समाज में संस्कृति को जिस तरह संभाला वह आज के समय में भी मातृशक्ति सहित हम सब के लिए अनुकरणीय उदाहरण है।

### भारत के नवोत्थान की प्रेरक शक्ति

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जन्मजयन्ती का वर्ष है। उन्होंने पराधीनता से मुक्त होकर काल के प्रवाह में आचार धर्म व सामाजिक रीति-रिवाजों में आयी विकृतियों को दूर कर, समाज को अपने मूल के शाश्वत मूल्यों पर खड़ा करने का प्रचंड उद्यम किया।

### 'सत्संग' अभियान

रामराज्य सदृश वातावरण निर्माण करने के लिए प्रजा की गुणवत्ता व चारित्र्य तथा स्वधर्म पर दृढ़ता अनिवार्य है। ऐसा संस्कार व दायित्वबोध सब में उत्पन्न करने के लिए परमपूज्य श्री श्री अनुकूलचन्द्र ठाकुर के द्वारा 'सत्संग' अभियान प्रवर्तित किया गया था। 2024 से 2025 'सत्संग' के मुख्यालय देवघर (झारखंड) में उस कर्मधारा की भी शताब्दी मनने वाली है। सेवा, संस्कार तथा विकास के अनेक उपक्रमों को लेकर यह अभियान आगे बढ़ रहा है।

### भगवान बिरसा मुंडा

15 नवम्बर, 2024 से भगवान बिरसा मुंडा की जन्मजयंती का 150वां वर्ष प्रारंभ होगा। भगवान बिरसा मुंडा के तेजस्वी जीवनयज्ञ के कारण ही अपने जनजातीय बंधुओं के स्वाभिमान, विकास तथा राष्ट्रीय जीवन में योगदान के लिए एक सुदृढ़ आधार मिला है।

### व्यक्तिगत व राष्ट्रीय चारित्र्य

प्रामाणिकता और निःस्वार्थ भावना से देश, धर्म, संस्कृति व समाज के हित में जीवन लगा देने वाली विभूतियों को हम इसलिए स्मरण करते हैं क्योंकि उन्होंने हम सबके हित में कार्य किया है तथा अपने स्वयं के जीवन से अनुकरणीय जीवन व्यवहार का उत्तम उदाहरण उपस्थित किया है। परिस्थिति अनुकूल हो या प्रतिकूल, व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय चारित्र्य की ऐसी दृढ़ता ही मांगल्य व सज्जनता की विजय के लिए शक्ति का आधार बनती है।

### देश विरोधी कुप्रयास

विश्व में भारत के प्रमुखत्व पाने से, जिनके निहित स्वार्थ मार खाते हैं, ऐसी शक्तियां भारत को एक मर्यादा के अंदर ही बढ़ने देना चाहेंगी। अभी-अभी बांग्लादेश में जो हिंसक तख्तापलट हुआ, परन्तु वहाँ के हिन्दू समाज पर अकारण नृशंस अत्याचारों की परंपरा को फिर से दोहराया गया। उन अत्याचारों के विरोध में वहां का हिन्दू समाज इस बार संगठित होकर स्वयं के बचाव में घर के बाहर आया, इसलिए थोड़ा बचाव हुआ। उदारता, मानवता, तथा सद्भावना के पक्षधर सभी के, विशेष कर भारत सरकार तथा विश्वभर के हिन्दुओं की सहायता की बांग्लादेश में अल्पसंख्यक बने हिन्दू समाज को आवश्यकता रहेगी।

### 'डीप स्टेट', 'वोकिज़्म', 'कल्चरल मार्क्सिस्ट'

'डीप स्टेट', 'वोकिज़्म', 'कल्चरल मार्क्सिस्ट' आजकल चर्चा में हैं। वास्तव में ये सभी सांस्कृतिक परम्पराओं के घोषित शत्रु हैं। सांस्कृतिक मूल्यों, परम्पराओं तथा जहां-जहां जो भी भद्र, मंगल माना जाता है, उसका समूल उच्छेद इस समूह की कार्यप्रणाली का अंग है। समाज मन बनाने वाले तंत्र व संस्थानों को अपने प्रभाव में लाना, उनके द्वारा समाज का विचार, संस्कार, तथा आस्था को नष्ट करना, यह इस कार्यप्रणाली का प्रथम चरण होता है। असंतोष को हवा देकर उस घटक को शेष समाज से अलग, व्यवस्था के विरुद्ध, उग्र बनाया जाता है। व्यवस्था, कानून, शासन, प्रशासन आदि के प्रति अश्रद्धा व द्वेष को उग्र बना कर अराजकता व भय का वातावरण खड़ा किया जाता है।

### संस्कार क्षरण के दुष्परिणाम

विभिन्न तंत्रों तथा संस्थानों द्वारा कराए गए विकृत प्रचार व

कुसंस्कार भारत में, विशेषत: नयी पीढ़ी के मन-वचन-कर्मों को बहुत बुरी तरह प्रभावित कर रहे हैं। बड़ों के साथ बच्चों के हाथों में भी सचल दूरभाष पहुंच गया है, वहां क्या दिखाया जा रहा है और बक्श्चे क्या देख रहे हैं, इस पर नियंत्रण नहीं के बराबर है। उस सामग्री का उल्लेख करना भी भद्रता का उल्लंघन होगा। अपने-अपने घर-परिवारों में हमारे तथा समाज में विज्ञापनों तथा विकृत दृक्श्राव्य सामग्री पर कानून के नियंत्रण की त्वरित आवश्यकता प्रतीत होती है। युवा पीढ़ी में जंगल में आग की तरह फैलने वाली नशीले पदार्थों की आदत भी समाज को अंदर से खोखला कर रही है। अच्छाई की ओर ले जाने वाले संस्कार पुनर्जीवित करने होंगे। हमें परिवार, समाज तथा संवाद माध्यमों के द्वारा सांस्कृतिक मूल्यों के प्रबोधन की व्यवस्था को फिर से जागृत करना होगा।

**कट्टरपन के कारण उकसाने वाली घटनाएं**

देश में कट्टरपन के कारण उकसाने वाली घटनाओं में भी अचानक वृद्धि दिख रही है। उनका अवलंबन न करते हुए हिंसा पर उतर आना, समाज के एकाध विशिष्ट वर्ग पर आक्रमण करना, बिना कारण हिंसा पर उतारू होना, भय पैदा करने का प्रयास करना गुंडागर्दी है। इसको उकसाने के प्रयास होते हैं अथवा योजनाबद्ध तरीके से किया जाता है।

**शोभायात्राओं पर अकारण पथराव**

गणेशोत्सवों के समय श्री गणपति विसर्जन की शोभायात्राओं पर अकारण पथराव तथा तदोपरान्त उत्पन्न तनावपूर्ण परिस्थिति की घटनाएं अराजकता के व्याकरण का उदाहरण हैं। ऐसी घटनाओं को होने नहीं देना, वो होती हैं तो तुरंत नियंत्रित करना, उपद्रवियों को त्वरित दण्डित करना प्रशासन का काम है। इस देश को एकात्म, सुख शान्तिमय, समृद्ध व बल संपन्न बनाना सबकी इच्छा है, सबका कर्तव्य भी है। इसमें हिन्दू समाज की जिम्मेवारी अधिक है।

**समरसता व सद्भावना :** समाज की स्वस्थ व सबल स्थिति की पहली शर्त है सामाजिक समरसता तथा समाज के विभिन्न वर्गों में परस्पर सद्भाव। कुछ संकेतात्मक कार्यक्रम मात्र करने से यह कार्य संपन्न नहीं होता है। समाज के सभी वर्गों व स्तरों में व्यक्ति की व कुटुम्बों की मित्रता होनी चाहिए। सार्वजनिक उपयोग व श्रद्धा के स्थल यथा मंदिर, पानी, शमशान आदि में समाज के सभी वर्गों को सहभागी होने का वातावरण चाहिए। समाज को बांटने का कोई कुचक्र सफल हो नहीं सकेगा। हम सब मिलकर, हममें जो दुर्बल जाति अथवा वर्ग है, उनके हित साधन के लिए क्या कर सकते हैं? नियमित क्रम से ऐसा विचार एवं कृति होती रही तो समाज स्वस्थ भी बनेगा व सद्भाव का वातावरण भी बनेगा।

**पर्यावरण :** विकास के बहाने विनाश की ओर ले जाने वाले अधूरे विकास पथ के अन्धानुसरण के परिणाम हम भी भुगत रहे हैं। गर्मी की ऋतु झुलसा देती है, वर्षा बहा कर ले जाती है और शीत ऋतु जीवन को जड़वत् जमा देती है। ऋतुओं की यह विक्षिप्त तीव्रता हम अनुभव कर रहे हैं। पर्यावरण संतुलन हेतु हम सामान्य लोग अपने घर से तीन छोटी-छोटी सरल बातों का आचरण करते हुए प्रारम्भ कर सकते हैं। पहली बात है - जल का न्यूनतम आवश्यक उपयोग तथा वर्षा जल का संधारण। दूसरी बात है - प्लास्टिक वस्तुओं का उपयोग नहीं करना। तीसरी बात अपने घर से लेकर बाहर भी हरियाली बढ़े, वृक्ष लगें, अपने जंगलों के और परम्परा से लगाए जाने वाले वृक्ष सर्वत्र खड़े हों, इसकी चिंता करना।

**नागरिक अनुशासन :** संविधान की प्रस्तावना, मार्गदर्शक तत्व, नागरिक कर्तव्य व नागरिक अधिकार का प्रबोधन सर्वत्र होते रहना चाहिए। परिवार से प्राप्त पारस्परिक व्यवहार का अनुशासन, परस्पर व्यवहार में मांगल्य, सद्भावना और भद्रता तथा सामाजिक व्यवहार में देशभक्ति व समाज के प्रति आत्मीयता के साथ कानून संविधान का निर्दोष पालन, इन सबको मिलाकर व्यक्ति का व्यक्तिगत व राष्ट्रीय चारित्र्य बनता है।

**स्व गौरव :** स्व-गौरव की प्रेरणा का बल ही जगत में हमारी उन्नति व स्वावलंबन का कारण बनने वाला व्यवहार उत्पन्न करता है। स्व-गौरव की प्रेरणा का बल ही जगत में हमारी उन्नति व स्वावलंबन का कारण बनने वाला व्यवहार उत्पन्न करता है।

**स्वदेशी व्यवहार :** घर के अन्दर भाषा, भूषा, भजन, भवन, भ्रमण और भोजन अपना हो, अपनी परम्परा का हो यह ध्यान रखना, यह सारांश में स्वदेशी व्यवहार है। सब क्षेत्रों में देश के स्वावलंबी बनने से स्वदेशी व्यवहार करना सरल होता है।

**सामूहिक शक्ति तथा शुद्ध शील ही शान्ति व उन्नति का आधार :** भारत वर्ष की शक्ति जितनी बढ़ेगी उतनी ही भारत वर्ष की स्वीकार्यता रहेगी। शील संपन्न व्यवहार के साथ शक्ति साधना भी महत्त्वपूर्ण है। इसलिए संघ की प्रार्थना में, कोई परास्त न कर सके ऐसी शक्ति और विश्व विनम्र हो ऐसा शील भगवान से मांगा गया है। विश्व मंगल साधना में मौन पुजारी के नाते संघ लगा है। हम सबको यही साधना अपनी पवित्र मातृभूमि को परम वैभव संपन्न बनाने की शक्ति व सफलता प्रदान करेगी।

# हिमाचल के विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित पथ संचलन कार्यक्रम

हिमाचल प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में विजयादशमी के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के स्थापना दिवस को उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर पथ संचलन कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें संघ के स्वयंसेवकों ने पूरे जोश और अनुशासन के साथ भाग लिया। पथ संचलन का उद्देश्य समाज में शांति, सद्भावना और एकजुटता का संदेश फैलाना था। स्वयंसेवकों ने पारंपरिक गणवेश में सुसज्जित होकर विभिन्न मार्गों पर संचलन किया, जिससे स्थानीय समाज में राष्ट्रीयता और सेवा का संदेश प्रभावी रूप से पहुंचा।

# कोर्ट निर्णय के बाद मस्जिद की अवैध तीन मंजिलों को गिराने का कार्य शुरू

शिमला में अवैध मस्जिद के निर्माण को लेकर स्थानीय लोगों ने विरोध करते हुए जोरदार प्रदर्शन किया। शासन ने उन्हें दबाने की भरपूर कोशिश की। लाठी चार्ज और वाटर कैनन का भी इस्तेमाल किया गया। परंतु हिंदूवादी सामाजिक कार्यकर्ताओं और हिंदुओं के संगठन का पलड़ा भारी रहा और अंतत: अवैध मस्जिद के ढांचे को गिराने का निर्णय हिंदुओं के पक्ष में आ गया। यद्यपि शोएब जमई ने पहली बार शिमला में आकर मस्जिद के निर्माण के पक्ष में अपनी दलीलें देकर मुस्लिम समुदाय को उकसाने का काम किया और कुछ तथा कथित धर्मनिरपेक्ष संगठनों ने भी रिज पर सामाजिक समरसता का ढोंग रचाते हुए राजनीतिक धरना प्रदर्शन भी किया। इसके जवाब में हिंदू संगठनों ने जिलाधीश कार्यालय के नजदीक एकत्रित होकर शिमला के लोअर बाजार में एक जुलूस निकाला और अवैध मस्जिद को गिराने की मांग की। दूसरी बार फिर जब शोएब जमई जब शिमला में आए तो उन्होंने मुस्लिम समुदाय द्वारा हिमाचल के बागवानों का सेब खरीदने के लिए भी बॉयकॉट करने की बात कही, जिससे दोनों पक्षों में तनाव बना हुआ है।

मस्जिद के मामले में स्थानीय लोगों की तरफ से पेश हुए वकील जगतपाल ठाकुर ने दावा किया कि जिस जमीन पर मस्जिद बनी हुई है, वो सरकारी है। यही नहीं, उन्होंने केस के बैकग्राउंड पर भी तर्क अदालत में पेश किए। इस मस्जिद की तीन मंजिल अवैध पाई गई हैं। इन तीन मंजिलों को गिराने के आदेश जारी किए गए हैं। नगर निगम कमिश्नर कोर्ट ने ये फैसला सुनाया है। हिमाचल प्रदेश में इन दिनों मस्जिदों को लेकर बवाल छिड़ा हुआ था। शिमला के संजौली में लोगों ने मस्जिद के अवैध हिस्से को गिराने के लिए विरोध प्रदर्शन किया था। हालांकि बाद में संजौली मस्जिद कमेटी ने शांति और सद्भाव के लिए अवैध हिस्से को गिराने की पेशकश की थी। कोर्ट में संजौली के लोगों की तरफ से वकील जगतपाल ठाकुर पेश हुए। उन्होंने कहा कि एमसी एक्ट में 254 (1) में छह महीने में अवैध निर्माण पर एक्शन का प्रावधान है। उन्होंने पूछा कि जब साल 2010 में रिपोर्ट आ चुकी है कि ग्राउंड फ्लोर गैरकानूनी है। जगतपाल ठाकुर के मुताबिक साल 1997-98 की जमाबंदी के मुताबिक खसरा नंबर-66 के आगे कोई भी मस्जिद नहीं है। यहां तक कि साल 2002-03 में भी जमीन में कोई मस्जिद रिकॉर्ड के अनुसार नहीं है। लोगों में अभी भी इस बात को लेकर आक्रोश है कि जब जमीन सरकारी है तो वक्फ बोर्ड का इस जमीन पर कब्जा कैसे जायज कहा जा सकता है। इस दृष्टि से मस्जिद का बनाया गया ढांचा ही गैरकानूनी है । इसलिए यहां पर मस्जिद बनाने की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए।

# चंबा की उड़नपरी सीमा ने हांगकांग में जीता गोल्ड

एशिया स्तर की 10,000 मीटर दौड़ में चंबा की उड़नपरी सीमा ने प्रतिभा का लोहा मनवाया। सीमा ने स्वर्ण पदक अपने नाम कर देश, प्रदेश और चंबा जिला का नाम रोशन किया। सीमा चंबा के की झुलाड़ा पंचायत के रेटा गांव की रहने वाली है। सीमा अब तक 15 से अधिक राष्ट्रीय और एक अंतरराष्ट्रीय पदक हासिल कर चुकी है। सीमा ने न केवल कड़ी मेहनत और लगन का परिचय दिया, बल्कि पूरे भारत को गर्व महसूस कराया है। सीमा ने पूरे आत्मविश्वास के साथ अपनी दौड़ पूरी की और प्रतिस्पर्धियों को पीछे छोड़ते हुए स्वर्ण पदक जीता। इस जीत ने भारत का नाम एशियाई खेलों में ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया है। कठिन परिश्रम और समर्पण के बल पर उन्होंने जीत हासिल की। उनकी यह जीत नई पीढ़ी के खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा है।

### एफडी तुड़वाकर मां ने भेजा था बैंकॉक

वर्ष 2017 में सीमा में आयोजित एशियन यूथ चौंपियनशिप में भाग लेने के लिए सीमा के पास पैसे नहीं थे। सीमा की माता ने एफडी तुड़वाकर सीमा को बैंकॉक में होने वाली प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए भेजा था। सीमा ने प्रतियोगिता में देश का प्रतिनिधित्व करते हुए कांस्य पदक जीता था।◆◆◆

# चूड़धार: शिरगुल मंदिर में 52 साल बाद संपन्न

# आस्था, समर्पण और सामाजिक एकता का प्रतीक

# शांत महायज्ञ

शिरगुल महाराज के चूड़धार मंदिर में 52 साल बाद आयोजित शांत महायज्ञ न केवल एक धार्मिक आयोजन था, बल्कि यह आस्था, परंपरा और समाज के समर्पण का अद्वितीय उदाहरण भी है। इस महायज्ञ में 12 देवताओं और 28 हजार श्रद्धालुओं की उपस्थिति ने इस ऐतिहासिक कार्यक्रम को दिव्यता प्रदान की। लंबे समय से चल रहे जीर्णोद्धार कार्य के पश्चात, मंदिर का भव्य पुनर्निर्माण और कुरुड़ की स्थापना धार्मिक इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय के रूप में दर्ज हो गया है।

### 5 क्विंटल फूलों से सजाया गया था मंदिर

**महायज्ञ को लेकर मंदिर को 5 क्विंटल फूलों से सजाया गया. यहां दो हजार से अधिक लोग महायज्ञ की व्यवस्था बनाने में जुटे। शांत महायज्ञ किसी भी मंदिर के निर्माण पूरा होने की अंतिम रस्म है, जिसमें कुरुड़ स्थापित करने की परंपरा है। इसे मंदिर का मुकुट कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।**

इस आयोजन के माध्यम से यह संदेश स्पष्ट होता है कि आस्था और धार्मिक परंपराएँ किसी व्यक्ति विशेष या समुदाय तक सीमित नहीं होतीं, बल्कि ये समाज के हर वर्ग को एक सूत्र में बाँधने की शक्ति रखती हैं। शिरगुल महाराज, जिन्हें भगवान शिव का अवतार माना जाता है, की तपोस्थली पर एकत्रित हजारों लोगों ने यह दिखाया कि सच्ची श्रद्धा और समर्पण समाज को एक नई दिशा प्रदान करने में सक्षम हैं।

**धार्मिक आयोजन और समाज की एकजुटता :** इस महायज्ञ ने यह सिखाया कि समाज में एकता और समर्पण से किसी भी बड़े कार्य को सफलतापूर्वक संपन्न किया जा सकता है। विभिन्न जिलों और रा%यों से आए श्रद्धालुओं ने न केवल भगवान के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की, बल्कि सामाजिक ताने-बाने को भी मजबूत किया। एक ओर जहां हजारों लोग इस आयोजन में सम्मिलित हुए, वहीं विभिन्न सरकारी और स्थानीय निकायों ने मिलकर इसकी सफल व्यवस्था सुनिश्चित की। यह आयोजन दर्शाता है कि जब समाज के सभी अंग एक साथ मिलकर कार्य करते हैं, तो कोई भी चुनौती बड़ी नहीं होती।

**आध्यात्मिक संदेश :** महायज्ञ के साथ-साथ इस आयोजन में स्थापित कुरुड़ और भव्य मंदिर हमें जीवन में संतुलन, शांति और अध्यात्म के महत्व को समझाते हैं। शिरगुल महाराज के जीवन और उनकी दंतकथाओं से हमें यह शिक्षा मिलती है कि संघर्ष चाहे जितना भी बड़ा हो, सच्चाई, धर्म और सदाचार के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को कभी हार नहीं मिलती। चूड़िया दानव से मुक्ति दिलाने के लिए शिरगुल महाराज का अवतार और मुगलों के अत्याचार से देवशक्ति द्वारा मुक्ति प्रदान करना इस बात का प्रतीक है कि जब-जब धरती पर धर्म संकट में आता है, तब-तब धर्म की स्थापना के लिए दिव्य शक्तियों का उदय होता है।

**परंपराओं की महत्ता :** मंदिर के जीर्णोद्धार और कुरुड़ की स्थापना से यह संदेश मिलता है कि हमारी पुरानी परंपराएं और धार्मिक स्थल हमारे समाज की धरोहर हैं। इन्हें सहेजना और अगली पीढ़ियों को सौंपना हमारा दायित्व है। 52 साल बाद इस तरह का आयोजन होना इस बात का प्रमाण है कि भले ही समय कितना भी बदल जाए, हमारी परंपराएं और आस्थाएं हमेशा हमारे जीवन का हिस्सा रहेंगी। यह हमारे सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों की निरंतरता को दर्शाता है।

**समाज के लिए संदेश :** आज के व्यस्त जीवन में यह महायज्ञ हमें यह याद दिलाता है कि हमें अपने जीवन में आस्था, समर्पण और शांति के लिए समय निकालना चाहिए। धर्म और अध्यात्म के माध्यम से हम अपने जीवन में संतुलन और सकारात्मक ऊर्जा को ला सकते हैं। चाहे वह परिवार हो, समाज हो या राष्ट्र, अगर हम सब मिलकर आस्था और धर्म के मार्ग पर चलें, तो समाज में हर तरह की कठिनाइयों का सामना आसानी से किया जा सकता है। अंत में, चूड़धार मंदिर में आयोजित यह महायज्ञ केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज में एकता, शांति और समृद्धि लाने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। ◆◆◆

भारत के सम्पूर्ण त्यौहारों में दीपावली का अपना विशेष स्थान है। इस पुनीत पर्व के साथ हमारा युग-युग का वह इतिहास ओतप्रोत है जिसकी आज के स्वतन्त्र वातावरण में हमें भारी आवश्यकता है। यही कारण है कि जिस उल्लास और उत्साह के साथ समस्त भारत में यह त्योहार मनाया जाता है वह अन्य पर्वों पर कम ही दिखलाई पड़ता है। आप किसी भी प्रान्त में चले जाइए इस अवसर पर सर्वत्र ही आपको नव उत्साह और एक नई उमंग के दर्शन होंगे। घरों में सप्ताहों पूर्व इस समारोह की तैयारी होती है और अमा इसकी वह अन्धकारमयी रजनी असंख्य दोपों की उज्ज्वल ज्योति से जगमगा उठती है। स्त्री, बालक, वृद्ध, युवा, सभी आनन्द- विभोर हो वरदायिनी माँ लक्ष्मी की उपासना करते हैं और उससे अपने प्रदीपालोकित गृह में पधारने की अभ्यर्थना करते हैं। नये-नये वस्त्र तथा बर्तन खरीदे जाते हैं। भारत के प्राय: सभी प्रान्तों में दीपावली का यही सामान्य रूप उपलब्ध होता है।

ऐतिहासिक पर्यालोचन बताता है कि कृषि-प्रधान भारत में आज से सहस्त्रों वर्ष पूर्व इस उत्सव का प्रचलन ऋतुपर्व के रूप में हुआ था, परन्तु ज्यों-ज्यों समय बीतता गया अनेक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनायें दीपावली से जुड़ती गईं ; फलत: पुराणेतिहास ग्रन्थों में हमें दीपावली के सम्बन्ध में अनेक आख्यान मिलते हैं।

स्कन्द, पद्म और भविष्यपुराण में इसके सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मान्यताये हैं। कहीं महाराज पृथु द्वारा दीन-हीन भारत को पृथ्वी दोहन करके - अन्न धनादि प्राप्ति के साधनों के नवीकरण द्वारा उत्पादन शक्ति में विशेष वृद्धि करके - समृद्ध तथा सुखी बना देने पर उनकी इस अपूर्व सफलता के उपलक्ष्य में दीपावली का प्रादुर्भूत होना लिखा है तो कहीं आज के दिन समुद्र मन्थन से भगवती लक्ष्मी के जन्म होने और इस की प्रसन्नता के उपलक्ष्य में लोगों द्वारा इस उत्सव को मनाये जाने का उल्लेख है। कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को क्रूर अत्याचारी शासक नरकासुर का वध करके उसके बन्दीगृह से अनेक राजाओं और 16000 राज-कन्याओं का उद्धार करने पर भगवान् कृष्ण का अभिनन्दन करने के लिए अत्याचार मुक्त जनता ने चतुर्दशी से अगले दिन अमावस्या को दीपमालिका मनाई थी-ऐसी भी एक पौराणिक गाथा है। महाभारत के आदि पर्व में पांडवों के वनसे लौटने पर प्रजाजनों द्वारा उनके स्वागत में नगरों को सजाने तथा उत्सव मनाने का जो उल्लेख है, कुछ लोग इसका सम्बन्ध भी दीपावली से जोड़ते हैं जबकि कुछ जनश्रुतियों के अनुसार सम्राट् विक्रमादित्य के विजयोपलक्ष्य में लोगों द्वारा दीपमालाएँ प्रकाशित करने की बात भी प्रचलित है। भगवान् राम के लंका विजयोपरान्त अयोध्या में अभिषिक्त हो जाने पर जब दीपावली पर्व आया होगा तो निश्चय ही सर्व-सुखी जनता ने उसे अधिक उल्लास और उत्साह से मनाया होगा और उस उल्लासजन्य अभूतपूर्व समारोह ने ही शायद इस जनश्रुति को जन्म दिया हो कि दीपावली का प्रारम्भ राम विजयोपलक्ष में हुआ। वर्तमान दीपावली उन सब को अपने अन्तर में संजोए भारतीयों के एक जीवित जागृत महान् राष्ट्रीय-पर्व के रूप में प्रति वर्ष हमारे सामने आती है।

दीपावली पर्व में लक्ष्मीपूजन समावेश का इतिहास बहुत मनोरंजक एवं महत्त्वपूर्ण है। सनत्कुमार-संहिता में लिखा है- 'एक बार दैत्यराज बलि ने समस्त भूमण्डल पर अधिकारकर लक्ष्मी सहित सम्पूर्ण देवताओं को अपने कारागार में डाल दिया और भूमण्डल पर एक छत्र शासन करने लगा। लक्ष्मी के अभाव से समस्त संसार क्षुब्ध हो उठा। यज्ञ यागादि सब बन्द हो गए। उस समय देवताओं की प्रार्थना पर भगवान् विष्णु ने 'वामन' रूप धारण करके बड़े कौशल से उस पराक्रमी दैत्य की आसुरी शक्ति पर विजय प्राप्त की और लक्ष्मी को उसके बन्धन से मुक्त किया। इससे समस्त संसार में हर्ष की एक अपूर्व लहर छा गई। आसुरी शासन से मुक्त प्रजा के हृदयों में प्रकाशमान वह हर्ष %योति दीपकों का साकार रूप धारण कर अखिल विश्व में जगमगा उठी। इस अवसरपर भगवती लक्ष्मी का विशेष रूप से पूजन सन्मान हुआ क्योंकि वे बलि के कारागार की कठोर यन्त्रणाओं को सहकर चिरकाल के अनन्तर मुक्त हुई थीं।

यद्यपि इस सुदीर्घ काल में भारत में अनेक परिवर्तन हुए, अनेक विदेशी राज्य और संस्कृतियाँ यहां आईं, प्रभुत्वशाली बनीं और नष्ट हो गईं, किन्तु दीपावली जैसे पर्व पर कोई प्रभाव न पड़ा। इन सब तूफानों में भी ये दिये जलते ही रहे। वैदिक साहित्य के अनन्तर हमें सम्पूर्ण अवांतर भारतीय साहित्य में दीपावली का वर्णन प्राप्त होता है। 'कल्पसूत्र' के अनुसार आज से अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व आज ही के दिन जैन सम्प्रदाय प्रवर्तक श्री महावीर स्वामी ने अपनी ऐहिक लीला संवरण की थी। उस समय देश देशांतर से आए हुए उनके शिष्यों ने निश्चय किया कि ज्ञान सूर्य तो अस्त हो गया अब दीपों का प्रकाश कर यह दिन मनाना चाहिए। तदनुसार स्वामी जी की स्मृति में उस समय विशेष दीपोत्सव होने का वर्णन

जैन ग्रंथों में प्राप्त होता है। इस पर्व पर किया जाने वाला प्रकाश मानव-हृदय की जिस चिरन्तन भावना का प्रतिरूप है वह है- अन्धकार से भटकते मानव समाज को प्रकाश दान कर सन्मार्ग पर लाने की भावना! प्रकाश ज्ञान का दूसरा रूप है। दीपावली के दिन सहस्त्रों दीपों को प्र%वलित कर मानो हम अपनी इसी भावना को प्रतिफलित हुआ पाते हैं। आज के दिन लक्ष्मी-पूजन के अतिरिक्त बही बसने, आय- व्यय पंचिका, रजिस्टर आदि के पूजन की भी प्रथा है। भारतीय अर्थ प्रणाली के अनुसार यह हमारे आर्थिक वर्ष का प्रथम दिन है। इस दिन हम अपने पिछले वर्ष के समस्त आय-व्यय तथा हानि लाभ आदि का गम्भीरता पूर्वक निरीक्षण करते हैं और भविष्य के लिए महत्त्वपूर्ण निर्णय भी। दूसरे शब्दों में इस दिन देश का प्रत्येक व्यक्ति अपनी आर्थिक प्रगति का निरीक्षण करता है। इस प्रकार यह दिन समस्त देश की आर्थिक उन्नति की जांच का दिन सिद्ध होता है।

इस पर्व का एक उद्देश्य देश के स्वास्थ्य को समुन्नत करना भी है। वर्षा ऋतु में धूप की कमी तथा विशुद्ध जलाभाव के कारण वायु-मण्डल में रोग-विषाणु व्याप्त हो जाते हैं। मच्छरों के बाहुल्य से ऋतुच्वर (मलेरिया) आदि रोग विशेष रूप से फैलते हैं और नागरिक स्वास्थ्य अपने स्वाभाविक स्तर से निम्न हो जाता है। इस अवसर पर लोग अपने घरों को स्वच्छ करते हैं, नीला थोथा, सफेदी द्वारा पुतवा कर सील दुर्गन्धी आदि हानिकारक तत्त्वों को दूर किया जाता है। निवास स्थान के प्रत्येक भाग को प्रदीपों द्वारा आलोकित किया जाता है। दीप पुञ्ज से प्राप्त होने वाला प्रकाश तथा उष्णता वर्षाजन्य रोग कीटाणुओं के विनाश में सर्वथा समर्थ होते हैं। तेल का सुस्निग्ध धूम सम्पूर्ण देश के कोने 2 में व्याप्त होकर नस्य-प्रणाली के द्वारा न केवल लोगों के मस्तिष्क को आप्यायित करता है किन्तु सम्पूर्ण संक्रामक कृमियों का व्यापक संहार करने में भी समर्थ होता है। दीपावली पर होने वाले क्रय-विक्रय का यदि लेखा-जोखा लगाया जाय तो उसकी संख्या अरबों रुपयों में गिनी जाने लायक बनेगी। क्या दीपावली की एक ही रात में होने वाले अरबों रुपये के इस विनिमय का राष्ट्र की अर्थ व्यवस्था पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता ? अवश्य पड़ता है। अर्थशास्त्र की दृष्टि से यह लक्ष्मी का वास्तविक पूजन है कि हम इस बहाने से राष्ट्र की अमित संपत्ति का वितरण राष्ट्र में ही कर देते हैं। इस प्रकार दीपावली राष्ट्रकी लक्ष्मी को राष्ट्र में ही रखकर इस देश को समृद्ध बनाने में महान् सहयोग देती है।◆◆◆

**लेखक प्रान्त बौद्धिक प्रमुख है।**

# सामाजिक समरसता का आदर्श कुल्लू दशहरा

श्रीमान कृष्ण जी, क्षेत्र सेवा प्रमुख

**धार्मिक आस्था का पर्व :** कुल्लू दशहरा का आरंभ 17वीं शताब्दी में हुआ था, जब कुल्लू के राजा जगत सिंह ने अपने राज्य में भगवान रघुनाथ जी की मूर्ति अयोध्या से लाकर की स्थापित की गई तब से, कुल्लू दशहरे का पर्व भगवान रघुनाथ जी की पूजा समस्त देवी देवताओं का समागम तथा भाव और शोभायात्रा के रूप में मनाया जाता है।

**समाज संगठन का महत्व :** कुल्लू दशहरा धार्मिक आस्था, समाज संगठन का भी एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह पर्व उन अनेक देवी-देवताओं का मिलन स्थल है। इस आयोजन में लगभग 200 से अधिक देवी-देवता और उनके साथ हजारों लोग एकत्रित होते हैं। समाज के विभिन्न वर्ग, जाति और पृष्ठभूमि के लोग इस पर्व में एक साथ आते हैं, जिससे आपसी मतभेद मिटते हैं और सामाजिक समरसता को बल मिलता है।

**सामाजिक समरसता का सन्देश :** कुल्लू दशहरा में देवी-देवताओं की शोभायात्रा के दौरान एक महत्वपूर्ण दृश्य देखने को मिलता है - अलग-अलग गाँवों के लोग अपने-अपने देवताओं के साथ भगवान रघुनाथ जी के दरबार में उपस्थित होते हैं। इस पर्व के माध्यम से यह सन्देश मिलता है कि भले ही समाज के लोग विभिन्न मतों और आस्थाओं का पालन करें, लेकिन एकता और सद्भावना की भावना सबमें समान होनी चाहिए।

कुल्लू दशहरे के दौरान स्थानीय समाज की विभिन्न जातियों, उपजातियों और सामाजिक समूहों के बीच की दूरी मिटती है। वे एक साथ मिलकर भगवान रघुनाथ जी की पूजा करते हैं और एक ही मंच पर अपने देवी-देवताओं को प्रस्तुत करते हैं। इस तरह के आयोजन समाज में जातिगत भेदभाव और ऊँच-नीच की दीवारों को तोड़ने का काम करते हैं, जिससे समाज में समरसता की भावना का विकास होता है।◆◆◆

# भाईदूज की परम्परा

**भाई दूज या यम द्वितीया भाई-बहन के अटूट प्रेम और सुरक्षा के रिश्ते का प्रतीक है। इस पर्व पर बहनें भाइयों की लंबी उम्र और खुशहाली की कामना करती हैं, जबकि भाई उनकी सुरक्षा का वचन देते हैं। यह पर्व पारिवारिक एकता, स्नेह और आपसी सहयोग को बढ़ावा देने के साथ, भाई-बहन के रिश्ते की महत्ता को दर्शाता है।**

भाई दूज की परंपरा भारत के विभिन्न हिस्सों में मनाई जाती है और भाई-बहन के रिश्ते को समर्पित है। यह त्योहार भाई और बहन के बीच प्रेम, स्नेह, और सुरक्षा के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। इसे भाई दूज, भैया दूज, भाई टीका या यम द्वितीया के नाम से जाना जाता है। यह दिवाली के दो दिन बाद मनाया जाता है।

यम द्वितीया, जिसे भाई दूज के नाम से भी जाना जाता है, एक हिंदू पर्व है जो भाई-बहन के पवित्र संबंध को समर्पित है। यह त्योहार कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाता है। इसका ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व यमराज (मृत्यु के देवता) और उनकी बहन यमुनाजी से जुड़ा हुआ है।

**यम द्वितीया की पौराणिक कथा :**

इस पर्व का इतिहास मुख्य रूप से यमराज और यमुनाजी से जुड़ा हुआ है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, यमराज अपनी बहन यमुनाजी से मिलने के लिए आए थे। यमुनाजी ने उनका बड़े हर्ष के साथ स्वागत किया, उन्हें भोजन कराया, तिलक लगाया और उनकी आरती उतारी। यमराज अपनी बहन की इस प्रेमभावना से प्रसन्न हुए और उसे वरदान दिया कि जो भाई इस दिन अपनी बहन से तिलक करवाएगा, उसे मृत्यु का भय नहीं रहेगा। इसी कथा के आधार पर इस दिन बहनें अपने भाइयों की लंबी उम्र और खुशहाली की कामना करती हैं।

**यम द्वितीया की परंपरा :**

**तिलक की परंपरा :** भाई दूज या यम द्वितीया के दिन बहनें अपने भाइयों को तिलक लगाकर उनके उज्जवल भविष्य और लंबी उम्र की कामना करती हैं। यह तिलक आमतौर पर चंदन, केसर, और अक्षत (चावल) से किया जाता है।

**आरती और प्रार्थना :** तिलक लगाने के बाद बहनें भाइयों की आरती उतारती हैं और उनके सुखी जीवन के लिए प्रार्थना करती हैं। भाई अपनी बहन की रक्षा का वचन देते हैं और उन्हें उपहार भी देते हैं।

**मिठाई और भोजन :** इस दिन विशेष रूप से भाई की पसंदीदा मिठाई और भोजन तैयार किया जाता है। भाई को मिठाई खिलाने की परंपरा होती है, और फिर बहनें उनके साथ भोजन करती हैं।

**उपहारों का आदान-प्रदान :** भाई दूज के दिन भाइयों द्वारा बहनों को उपहार दिए जाते हैं, जिनमें आभूषण, वस्त्र, धन आदि शामिल होते हैं।

**नदी या जल में स्नान :** कुछ क्षेत्रों में यमुनाजी की कथा से प्रेरित होकर भाई-बहन साथ में नदी या जलाशय में स्नान करते हैं, जिससे उन्हें यमुनाजी का आशीर्वाद प्राप्त हो सके।

**यम द्वितीया का उद्देश्य :** यम द्वितीया का मुख्य उद्देश्य भाई-बहन के रिश्ते को मजबूत करना और उनके बीच प्रेम, स्नेह, और सहयोग को बढ़ावा देना है। इस दिन बहनें अपने भाइयों की सफलता, सुरक्षा और समृद्धि की कामना करती हैं, जबकि भाई अपनी बहनों की सुरक्षा और उनका ध्यान रखने का वचन देते हैं। यम द्वितीया एक ऐसा पर्व है जो परिवार में एकता और आपसी प्रेम को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है, और इसकी पौराणिक कथा हमें भाई-बहन के अटूट रिश्ते की महत्ता का संदेश देती है।◆◆◆

# सनातन धर्म और गाय का सम्बन्ध

रवीश मृगेंद्रा

प्रथम दृष्ट्या सनातन धर्म और गाय दो भिन्न अर्थों वाले शब्द प्रतीत होते है परंतु गहनता से विचार करने पर एक-दूसरे के पूरक जान पड़ते हैं। सनातन के प्राचीन ग्रंथों एवं शास्त्रों के अनुसार गाय एक पूजनीय जीव है। जिसके विभिन्न अंगों में भिन्न-भिन्न देवी देवताओं का निवासस्थान है। धर्म ग्रंथों में गाय को माता एवं बैल को धर्म की संज्ञा दी गई है ।

**सर्वे देवा : स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौ।** अर्थात् गाय में सभी देवी-देवताओं का वास होता है। अत: गाय सर्वदेवमयी है।

गाय मानवों के पालन हेतु दुग्ध, घी, गोबर, गोमूत्र प्रदान करती है। जिसका मनुष्य अपनी आवश्यकतानुसार उपयोग कर सकते हैं। गाय को तीर्थों का भी तीर्थ कहा गया है।

**त्वं माता सर्व देवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम्।**
**त्वं तीर्थ सर्वतीर्थानां नमस्तेस्तु सदानधे।**

अर्थात् आप ही सर्व देवताओं की माता हो और यज्ञ का कारण भी आप ही हो। समस्त तीर्थो में से आप सबसे पवित्र हो। अत: आप तीर्थो का भी तीर्थ हो। हे गौ माता! तुम्हें प्रणाम है।

पश्चिमी हिमालय में स्थित हिमाचल प्रदेश के विभिन्न देवालयों का भी गाय से सीधा सम्बन्ध रहा है। गाय के स्तनों से स्वत: देवताओ की मूल पिँडी पर दुग्ध-धारा का गिरना, तदन्तर देवी देवताओं का प्राकट्य यह दर्शाता है कि गाय का दुग्ध पवित्र होता है। गाय एक ऐसी दिव्य जीवात्मा है, जो जीव की न केवल इस जीवन में अपितु मृत्यु उपरान्त भी वैतरणी पार कराने में सहायता करती है। ऐसे कई वृत्तान्त हैं, जहां गाय ने मानवों की बुरे समय में सहायता की है। एक लोक किँवदंती के अनुसार एक बार एक व्यक्ति के पीछे प्रेत पड़ गया। उस व्यक्ति ने अपने जीवन की रक्षा हेतु गाय से प्रार्थना की। दयालु गाय ने प्रेत को अपने पूँछ के बाल गिनने को कहा। प्रेत जैसे ही बालों की गणना कर लेता तो गाय पूँछ हिला देती। इस कारण प्रेत को बाल गिनने में अत्यधिक समय लगा और इस अवसर का लाभ उठाकर व्यक्ति सुरक्षित स्थान तक पहुंचने में सफ़ल रहा।

वैदिक काल में राजाओं द्वारा ब्राह्मणों को गाय के दान व उसके फल का वर्णन शास्त्रों में बड़े सुन्दर ढंग से किया गया है। गाय अन्य बहुमूल्य रत्नों की भाँति शत्रुता का कारण भी रही है। विष्णु अवतार भगवान राम के कुलगुरु वशिष्ठ मुनि व राजा कौशिक, जो तप करने के उपरान्त ऋषि विश्वामित्र नाम से जान गए उनकी शत्रुता का कारण मुनि श्रेष्ठ वशिष्ठ की कामधेनु गाय नंदिनी थी। ऋषि जम्दग्नि की कामधेनु गाय के चमत्कारों से राजा कार्तवीर्य अर्जुन (सहस्त्रबाहु अर्जुन) भी आश्चर्यचकित रह गये थे और उनके द्वारा बलपूर्वक गाय को छीनने, ऋषि जम्दग्नि की राजा सहस्त्रबाहु अर्जुन के पुत्रों द्वारा हत्या, भगवान विष्णु के अंशावतार परशुराम द्वारा राजा सहस्त्रबाहु व समस्त धरा से अधर्मी क्षत्रियों का नाश का कारण भी एक गाय थी। ऐसी गाथाओं से गाय की सनातन में महत्ता ज्ञात होती है। गाय की रक्षा हेतुभारत वर्ष के वीरों ने अपने पराक्रम द्वारा मलेच्छों को नाकों चने चबवा दिये थे। लोक देवता गुग्गा जाहर वीर जो गुरु गोरक्ष नाथ के आशीर्वादस्वरुप चौहान रानी बाछल को पुत्र रूप में प्राप्त हुये थे, उन्होंने बगदाद जाकर निर्मल व पवित्र गायों की मलेच्छों द्वारा होने वाली गौ हत्या से रक्षा की थी। मलेच्छों द्वारा भारतवर्ष में लड़े गये कई युद्धों में गायों को आगे करके युद्ध में छल भी किया गया जिसमें महमूद ग़ज़नवी के भांजे सैयद सालार मसूद द्वारा महाराजा सुहेलदेव के विरुद्ध युद्ध में नीचता से गोवंश को आगे करना एक उदाहरण है। भगवान श्रीकृष्ण एवं अवधूत गुरु दत्तात्रेय सदैव गाय के साथ ही रहते हैं। ऐसा धर्म ग्रंथोँ में वर्णित है। लोगों द्वारा सड़कों पर अनाथ छोड़े गये गोवंश को शीघ्र उचित स्थान प्रदान करने व ऐसे कुकृत्य को तत्काल रोकने संबंधित आदेश वर्तमान में कूल्लू घाटी के देवी देवताओं द्वारा गुर के माध्यम से दिये जाते रहे हैं।

भारत प्राचीन काल से ही एक कृषि प्रधान देश रहा है। जहाँ कृषक के जीवनयापन में गौवंश का योगदान उल्लेखनीय है। भारतवर्ष में देसी गाय की 27 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। वैज्ञानिक शोध में भी यह बात सामने आई है कि गाय को स्पर्श करने व सहलाने से मनुष्य हृदय शान्ति का अनुभव करता है। यह बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण है कि ईद आदि में गौ हत्या के दृश्य भारतवर्ष में देखे जाते हैं। इस धरा में बड़ रहे अधर्म का कारण गौ हत्या भी है। हमारे पूर्वजों व स्वर्ग के देवी देवताओ ने भी जिसे पूजा है, उसके हित व पालन के लिये हम कितने चिन्तित हैं। यह आत्म मंथन करने का ज्वलंत विषय है। ◆◆◆

# हिम फिल्मोत्सव 2024

## हिमाचल संस्कृति और सामाजिक चेतना का बड़ा मंच है हिम फिल्मोत्सव

# फिल्म उद्योग के लिए मील का पत्थर होगा साबित

**41 फिल्में प्रदर्शित**

**पहले स्थान पर**

**कैंपस फिल्म में 'धाम'**
**शॉर्ट फिल्म में 'चुप ही रहो'**
**डॉक्यूमेंट्री में गद्दी रही**

**धर्मशाला में हिम सिने सोसायटी द्वारा आयोजित दो दिवसीय फिल्मोत्सव के दौरान 41 फिल्में आई थीं। इनमें से कैंपस फिल्म में 'धाम' को प्रथम, 'कहलूर' को द्वितीय, और 'ध्रुव' तारा को तृतीय स्थान मिला। शॉर्ट फिल्म श्रेणी में 'चुप ही रहो' को प्रथम, 'इट्स नॉट जस्ट ए पेंटिंग' को द्वितीय और 'एक बूंद सागर' को तृतीय स्थान मिला। इसके अलावा डॉक्यूमेंट्री श्रेणी में गद्दी प्रथम, रणसिंघा द्वितीय, प्रेमाश्रय तृतीय, बेस्ट एक्ट्रेस गुंजन ठाकुर 'ध्रुव तारा', बेस्ट पुरुष एक्टर कमल शर्मा, बेस्ट स्टोरी फिल्म इंटरोस्पेक्शन, बेस्ट एडिटिंग फिल्म देव देयों परंपरा रही। बेस्ट डायरेक्टर दिशा भारद्वाज 'चुप ही रहो' के लिए रहीं। स्पेशल**

हिम फिल्मोत्सव 2024 ने धर्मशाला में भारतीय सिनेमा और हिमाचल प्रदेश के फिल्म उद्योग की संभावनाओं पर एक मंच प्रस्तुत किया। इस दो दिवसीय आयोजन का उद्देश्य न केवल मनोरंजन था बल्कि फिल्म निर्माण के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रभावों पर विचार-विमर्श भी करना था।

फिल्मोत्सव का उद्घाटन सांसद डॉ. राजीव भारद्वाज ने किया और उन्होंने युवाओं में फिल्म निर्माण के प्रति रुचि को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर दिया। हिम सिने सोसायटी-एक सोच द्वारा आयोजित इस महोत्सव में भारतीय सिनेमा जगत की कई प्रसिद्ध हस्तियों ने भाग लिया और फिल्मों के माध्यम से भारतीय और हिमाचली संस्कृति को एक साथ प्रदर्शित किया गया।

### ... महोत्सव का उद्देश्य

इस महोत्सव का उद्देश्य स्थानीय कलाकारों को प्रोत्साहन देना था। पहले दिन, सुदीप्तो सेन जैसे फिल्मकारों ने मास्टर क्लास के माध्यम से फिल्म निर्माण की तकनीकी बारीकियों पर विचार साझा किए। सुदीप्तो सेन ने हिमाचल प्रदेश में फिल्म निर्माण को बढ़ावा देने और रोजगार सृजन के अवसरों पर जोर दिया। उनके अनुसार, हिमाचल प्रदेश की प्राकृतिक सुंदरता न केवल पर्यटन को बढ़ावा दे सकती है बल्कि स्थानीय रोजगार सृजन का भी एक साधन बन सकती है। सेन का सुझाव है कि हिमाचल में फिल्म निर्माण को सुगम बनाने के लिए एक समन्वित समिति का गठन किया जाना चाहिए, जैसा कि अन्य राज्यों में किया गया है।

हिम फिल्मोत्सव 2024 का एक और आकर्षण अभिनेता मनोज जोशी का फिल्म 'मैच फिक्सिंग' का प्रोमो था। इस फिल्म ने खेल और समाज में नैतिकता और ईमानदारी के महत्व पर चर्चा को प्रेरित किया। इसी तरह, फिल्म 'चुप ही रहो' ने शॉर्ट फिल्म श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया और सामाजिक न्याय और ग्रामीण जीवन के मुद्दों पर दर्शकों को जागरूक किया। महोत्सव में तिब्बत सरकार के प्रधानमंत्री पेंपा छेरिंग और विधायक सुधीर शर्मा जैसे प्रमुख व्यक्तित्वों ने भाग लिया। उन्होंने सिनेमा के माध्यम से समाज में चेतना और सकारात्मक बदलाव लाने की बात कही।

### ... इन फिल्मों ने किया प्रभावित

हिमाचल प्रदेश की संस्कृति को प्रदर्शित करने वाली फिल्में जैसे 'ध्रुव तारा,' 'हिमाचल की धाम,' 'हिमाचल के मेले,' और 'चार धाम' इस महोत्सव के मुख्य आकर्षण रहे। इन फिल्मों ने न केवल राज्य की संस्कृति को प्रस्तुत किया बल्कि इसकी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को भी जीवित रखा। साथ ही, स्थानीय समुदायों और संस्कृति की पहचान को बढ़ावा देने में भी यह महोत्सव सहायक सिद्ध हुआ।

### दिव्यांग बच्चों की सहभागिता से बढ़ा समावेश

महोत्सव में दिव्यांग बच्चों की भागीदारी ने इसे और भी अधिक समावेशी बना दिया। बच्चों ने दीप जलाकर दिवाली पर्व की शुरुआत की और इस महोत्सव ने समावेशिता के महत्व को भी रेखांकित किया। अंतत:, हिम फिल्मोत्सव 2024 ने धर्मशाला में न केवल सिनेमा प्रेमियों और कलाकारों को एक मंच प्रदान किया, बल्कि यह आयोजन राज्य की सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक सुधार के प्रति भी जागरूकता बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ। इस महोत्सव ने हिमाचल प्रदेश के कला प्रेमियों, छात्रों और सिनेमा के प्रति उत्साही लोगों को एकीकृत किया और राज्य की संस्कृति को एक अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई। महोत्सव में सिनेमा को एक समग्र दृष्टिकोण से देखने और उसे सामाजिक सुधार के माध्यम के रूप में उपयोग करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया गया।

### ... मनोरंजन का ही नहीं जन चेतना का भी माध्यम

यह फिल्मोत्सव हिमाचल के फिल्म उद्योग के भविष्य के लिए मील का पत्थर साबित हो सकता है और यह राज्य को न केवल भारतीय सिनेमा के मानचित्र पर एक विशिष्ट स्थान प्रदान कर सकता है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। सिनेमा को केवल मनोरंजन के साधन के रूप में न देख कर, इसे समाज में चेतना और जागरूकता फैलाने का माध्यम माना जा रहा है। हिमाचल प्रदेश में इस प्रकार के आयोजनों का होना राज्य के युवाओं को सिनेमा में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है और उनके लिए एक नई दिशा प्रस्तुत कर सकता है।

## सिनेमा से समाज में चेतना और सकारात्मक बदलाव

**निर्वासित तिब्बत सरकार के प्रधानमंत्री पेंपा सेरिंग ने कहा कि फिल्म स्मृति लंबे समय तक रहती है, जो समाज में चेतना लाने का कार्य करती है। उन्होंने कहा कि फिल्म समाज का आईना होती है। उन्होंने सिनेमा के माध्यम से समाज में चेतना और सकारात्मक बदलाव लाने की बात कही और इस कार्यक्रम आयोजित करवाने के लिए हिम**

## 'द केरल स्टोरी-2' की भी तैयारी

**फिल्म 'द केरल स्टोरी' के निर्देशक सुदीप्तो सेन ने भारतीय सिनेमा के समग्र दृष्टिकोण पर जोर दिया और इसे केवल बॉलीवुड या क्षेत्रीय सिनेमा तक सीमित न रखकर 'भारतीय सिनेमा' के रूप में देखे जाने की बात कही। उन्होंने कहा अगर हालात**

## भारत पूरे विश्व को कथा कहने वाला देश

**प्रसिद्ध अभिनेता मनोज जोशी ने कहा कि भारत, पूरे विश्व को कथा कहने वाला देश है। वे उन्होंने हिमाचल के युवा फिल्ममेकर की सराहना की, जिन्होंने बिना किसी प्रशिक्षण के अपनी फिल्मों का निर्माण किया है। उनका मानना है कि यदि इन युवाओं को उचित प्रशिक्षण दिया जाए, तो और भी बेहतर फिल्में बन सकती हैं। उन्होंने यह भी कहा कि पहाड़ और हिमाचल उनके लिए विशेष हैं।**

# मदरसे में चल रहा था जाली नोटों का छापाखाना

**राष्ट्रभक्त बनाने वाले संगठन को बताया जा रहा था आतंकी - महाकुंभ के दौरान करोड़ें रुपये खपाने की थी तैयारी**

28 अगस्त को अतरसुइया (प्रयागराज) स्थित मदरसा जामिया हबीबिया मस्जिद-ए-आजम से बड़ी संख्या में जाली नोट व छापने के उपकरण बरामद किए गए। यह मदरसा मस्जिद परिसर में संचालित था। इस रैकेट को मदरसे का प्रिंसिपल (मौलवी) तफसीरूल आरीफीन चला रहा था। उक्त मामले में जाली नोट बनाने में सहयोग करने वाले इसी मदरसे के छात्र रहे जाहिर खान, साहिद व अफजल (सभी की उम्र 18-25) को गिरफ्तार किया गया है।

### आपत्तिजनक साहित्य की भरमार

प्रयागराज डीसीपी शहर श्री दीपक भूकर ने बताया कि मदरसा प्रिंसिपल के कक्ष में आरएसएस को लेकर पढ़ाया जा रहा आपत्तिजनक साहित्य और तस्वीरें भी मिली हैं जिनमें उसे देश का सबसे बड़ा आतंकी संगठन बताया गया है। प्राप्त पुस्तक के लेखक महाराष्ट्र के पूर्व पुलिस महानिरीक्षक एसएम मुशर्रफ हैं।

### महाकुंभ में खपाने की थी तैयारी

डीसीपी भूकर के अनुसार पकड़े गए चरमपंथी 100-100 के नोट ही छाप रहे थे जिससे उन्हें आसानी से बाजार में चलाया जा सके। पिछले तीन माह में इन्होंने लगभग 6 लाख रुपये के जाली नोट स्थानीय बाजार में खपा दिये थे। जनवरी, 2025 में प्रयागराज में होने वाले महाकुंभ के दौरान लगभग 2 करोड़ से अधिक जाली नोटों को खपाने की योजना थी।

**अवैध मदरसे :** पहली सितम्बर को बदायूं के गांव मूसाझाग में अवैध तरीके से मदरसा बनवाया जा रहा था। ग्रामीणों की शिकायत पर अवैध मदरसे को बुलडोजर से ध्वस्त करा दिया गया। मूसाझाग थाने से लगभग एक किमी दूर बनी मस्जिद भी पंचायत की जमीन पर अतिक्रमण कर बनाई जा रही थी। उल्लेखनीय है कि हिंदू जागरण मंच के पदाधिकारियों के साथ ग्रामीणों ने उक्त अवैध मदरसे का निर्माण रुकवाने के लिए विरोध-प्रदर्शन किया था।◆◆◆

# विदेशों में पढ़ रहे विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परम्परा से अवगत करवाएगा सी.यू.

**लंदन में किंग्स कालेज में आयोजित संगोष्ठी में बोले कुलपति**

केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि यूनाइटेड किंग्डम में भारतीय मूल के लगभग 1,39,539 विद्यार्थी शिक्षा वीजा के तहत शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इन विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परंपरा से अवगत करवाना अत्यंत आवश्यक है जिससे ये विद्यार्थी भारत और भारतीयता पर गर्व कर सकें। लगभग 13 लाख विद्यार्थी भारत से विदेशों में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं जो एक बहुत बड़ी संख्या है। ये सभी भारतीय मूल के विद्यार्थी भारत के बारे में जानने के लिए इच्छुक भी हैं और इनको भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ने का प्रयास करना चाहिए। कुलपति अपने लंदन दौरे के दौरान इंडिया नॉलेज कंसोर्टियम की ओर से लंदन के प्रतिष्ठित किंग्स कालेज में आयोजित एक संगोष्ठी के दौरान मौजूद शिक्षकों, भारतीय मूल के विद्यार्थियों और ब्रिटिश मूल के विद्यार्थियों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल उन सभी भारतीय मूल के विद्यार्थियों जो कि विदेशों में खासकर यूरोप और मिडिल ईस्ट में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, उनके लिए भारतीय ज्ञान परंपरा के नए पाठ्यक्रम शुरू करेगा और अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षणक सहयोग से विश्वविद्यालयों के साथ संधि करके इन विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परंपरा से रूबरू करवाएगा। भारत विश्व गुरु है और इस परिपाटी में केंद्रीय विश्वविद्यालय भारतीय ज्ञान परंपरा का इन देशों में प्रचार प्रसार करेगा। उन्होंने कहा कि केंद्रीय विश्वविद्यालय ऐसे बड़े विश्वविद्यालयों के साथ शैक्षणिक संबंध स्थापित करके ऐसे पाठ्यक्रमों का निर्माण करेगा। इस हेतु इस लंदन यात्रा के दौरान कुछ प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों के साथ एम.ओ.यू. भी हस्ताक्षर किए इस एक दिवसीय संगोष्ठी में केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल के कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा और अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक सहयोग के निदेशक प्रो. संदीप कुलश्रेष्ठ भी उपस्थित रहे।◆◆◆

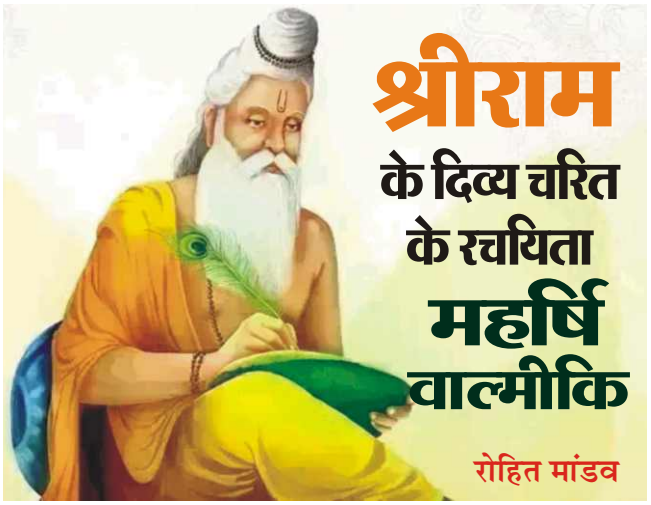


भारतीय साहित्य और संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। महर्षि वाल्मीकि को संस्कृत के प्रथम कवि माना जाता है और उन्हें 'आदिकवि' की उपाधि प्राप्त है। उनके द्वारा रचित महाकाव्य रामायण न केवल भारतीय धर्म और साहित्य का अद्भुत ग्रंथ है, बल्कि यह विश्व साहित्य की महान कृतियों में से एक है।

वाल्मीकि का जीवन

वाल्मीकि का जन्म और प्रारंभिक जीवन के बारे में विभिन्न कथाएं हैं। महर्षि नारद से हुई उनकी भेंट ने उनके जीवन में परिवर्तन लाया। नारद ने उन्हें आत्मचिंतन और साधना का मार्ग दिखाया। रत्नाकर ने तपस्या की और दीर्घ साधना के पश्चात् वह महर्षि वाल्मीकि के रूप में प्रसिद्ध हुए। उनकी तपस्या इतनी गहन थी कि उनके शरीर पर दीमकों (वाल्मिक) ने अपना घर बना लिया, और इसी कारण उनका नाम वाल्मीकि पड़ा।

**रामायण की रचना :** वाल्मीकि के रामायण की रचना का एक प्रसिद्ध प्रसंग है। कहा जाता है कि एक दिन महर्षि वाल्मीकि तमसा नदी के किनारे ध्यानमग्न थे। उन्होंने वहां क्रौंच पक्षियों के एक जोड़े को देखा। अचानक एक शिकारी ने उनमें से एक पक्षी को मार डाला, जिससे दूसरा पक्षी बहुत दुखी हुआ। इस दृश्य को देखकर वाल्मीकि के मन में करुणा उत्पन्न हुई और उन्होंने शोक में एक श्लोक की रचना की। यह श्लोक संस्कृत में लिखा गया पहला श्लोक माना जाता है और इसी घटना से प्रेरित होकर उन्होंने रामायण की रचना की। वाल्मीकि के अनुसार, भगवान राम का जीवन एक आदर्श पुरुष और मर्यादा पुरुषोत्तम का जीवन है। रामायण का मुख्य विषय राम, सीता, और लक्ष्मण की कथा है, जिसमें राम के वनवास, रावण के द्वारा सीता का हरण, और अंततः राम द्वारा रावण का वध और सीता की वापसी का वर्णन है। रामायण में 7 कांड बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधाकांड, सुंदरकांड, लंकाकांड (युद्धकांड), उत्तरकांड (अध्याय) है। यह महाकाव्य न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह नैतिकता, धर्म, कर्तव्य और आदर्श जीवन का अद्भुत वर्णन करता है।

वाल्मीकि रामायण में भगवान राम का चरित्र आदर्श और मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित किया गया है। वाल्मीकि ने राम के व्यक्तित्व को उन सभी गुणों के साथ प्रस्तुत किया है, जिन्हें समाज में सबसे उत्तम माना जाता है, जैसे कि सत्यनिष्ठा, दया, धर्मपरायणता, कर्तव्यनिष्ठा, शौर्य, विनम्रता, और शील। राम का चरित्र संपूर्ण मानवीय गुणों और मर्यादाओं का प्रतीक है। उनके जीवन की हर घटना और कार्य ने उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

**राम के चरित्र की मुख्य विशेषताएं :** सत्यनिष्ठा: राम का चरित्र सत्य के प्रति अटल निष्ठा को दर्शाता है। जब कैकेयी ने राजा दशरथ से दो वरदान मांगे और राम को 14 वर्षों के वनवास पर जाने का आदेश दिया गया, तो राम ने इसे सहजता से स्वीकार किया। उन्होंने पिता की आज्ञा को सर्वोपरि माना और बिना किसी द्वेष या क्रोध के वनवास को अपना धर्म माना। राम ने यह दिखाया कि एक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों और वचनों के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित रहना चाहिए, चाहे परिस्थितियां कितनी भी कठिन क्यों न हों।

**धैर्य और सहनशीलता :** राम का धैर्य और सहनशीलता उनके चरित्र का महत्वपूर्ण पहलू है। वनवास के दौरान उन्होंने अनेक कठिनाइयों का सामना किया, परंतु उन्होंने कभी भी अपने कर्तव्यों से विमुख नहीं हुए। माता सीता के हरण के बाद भी, राम ने धैर्य नहीं खोया और उन्होंने अपनी पत्नी की खोज के लिए पूरी तरह से दृढ़ संकल्प बनाए रखा।

**शौर्य :** राम केवल एक शांत, धैर्यवान और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति नहीं थे, बल्कि एक महान योद्धा भी थे। उन्होंने राक्षसों के साथ युद्ध किया और धर्म की स्थापना के लिए अनीति और अत्याचार का अंत किया। रावण जैसे शक्तिशाली राजा को पराजित कर उन्होंने धर्म की विजय और सत्य की प्रतिष्ठा की। राम का शौर्य न केवल शारीरिक बल में था, बल्कि नैतिक और मानसिक बल में भी था।

# अखरोट की स्याही से आय का उपार्जन

पारुल अरोड़ा

**हमारे शास्त्रों में स्याही, लेखनी, दवात (मसीभाजन) और पत्र का संदर्भ इस प्रकार है।**

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्तवा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानमीश पारं न याति।।

अर्थात् श्वेतगिरि (हिमालय) जितना बड़ा ढेर कज्जल का ही, जिसे समुद्र जितने बड़े पानी से भरे पात्र (दवात) में घोला जाय, देव वृक्ष (कल्प वृक्ष) की शाखाओं से लेखनी बनाई जाय (जो कभी समाप्त ना हो) और समस्त पृथ्वी को पत्र (कागज) बनाकर शारदा स्वयं सरस्वती लिखने बैठे और निरन्तर लिखती रहे तो भी हे भगवान तुम्हारे गुणों का पार नहीं है। मसि, मशि या मषी का अर्थ कज्जल है। स्याही का एक अन्य प्रकार जो विश्व भर में बहुत लम्बे समय से प्रचलित रहा है। इंटरनेट पर वॉलनट ईंक नाम से ढुंढेगें तो विदेशी कम्पनि की कांच की छोटी डब्बी में 59 मिलीलीटर अखरोट की स्याही आठसौ-नौसो रुपए में मिलेगी। अखरोट की स्याही को सुखा कर जिसे (वॉलनट ईंक क्रिस्टल) कहा जाता है। 15 ग्राम 900 रुपए के आस पास मिलेगी। किसी-किसी कम्पनी की तो दो हजार के आस पास भी है इतनी सी स्याही। हिमाचल प्रदेश में अखरोट के पेड़ बड़ी मात्रा में हैं। मंडी क्षेत्र में तो अखरोट से जुड़ा पर्व सायर बरसातों के समाप्त होने पर अश्विन मास की संक्रांति को बनाया जाता है। इस दिन विशेष कर अपने सगे संबंधियों को अखरोट दिए जाते हैं तथा घर घर में अखरोटो की पूजा भी की जाती है। अखरोट के वृक्ष पर हरे रंग का फल लगता है। इस हरे रंग के छिलके के भितर ही अखरोट होता है। अखरोट का व्यापार करने वाले ग्रामीण लोग बाहरी हरे छिलके को फेंक देते हैं। क्योंकि उनके लिए इस हरे छिलके का कोई प्रयोग नहीं है। आपको जानकर आश्चर्य होगा की इसी हरे छिलके से अखरोट की स्याही का निर्माण विश्व भर में जहां-जहां अखरोट की पैदावार होती है किया जाता है। अखरोट की स्याही से लिखी पाण्डुलिपियां भी प्राप्त हुई हैं। देश-विदेश में अखरोट की स्याही का बाजार पहले से ही उपलब्ध है।

# 'संस्कारयुक्त शिक्षा के लिए चेतना संस्था का योगदान

## पुरस्कार प्रदान करके किया बच्चों का उत्साहवर्धन'

बिलासपुर की चेतना संस्था ने बच्चों में शिक्षा के प्रति जुनून पैदा करने और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया है। इसी कड़ी में शनिवार को एसवीएम रौड़ा और एसवीएम निहाल स्कूलों में निबंध लेखन प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिसमें सीनियर और जूनियर विंग के छात्रों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के अंत में, सीनियर विंग की सिमरन, शगुन, खुशी, और वंशिका को साइकिलें पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गईं। वहीं, जूनियर विंग की श्रद्धा और सुप्रिया को ईयर पॉड्स, नकद राशि और स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। चेतना संस्था के सचिव हरीश नड्डा ने पुरस्कार वितरित करते हुए बच्चों को शिक्षा के प्रति उत्साहित किया और नशे जैसी बुरी आदतों से दूर रहने का आग्रह किया। उन्होंने बताया कि संस्था अपने सामाजिक दायित्वों का पूरी ईमानदारी से निर्वहन कर रही है और बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए ऐसे आयोजनों पर जोर दे रही है। इससे पहले, संस्था ने डॉ. एनएल नड्डा क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया था, जिसमें 23 स्कूलों की 102 टीमों से कुल 204 बच्चों ने भाग लिया था। इस प्रतियोगिता में विजेताओं को नकद राशि से पुरस्कृत किया गया। नड्डा ने छात्रों को मेहनत, लगन और ईमानदारी से सफलता पाने का मंत्र दिया और कहा कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। इस आयोजन में विद्यालय के प्रधानाचार्य, प्रबंध समिति के सदस्य और शिक्षक भी उपस्थित थे, जिन्होंने बच्चों के उज्वल भविष्य की कामना की।

# चंबा के कीवी मैन ने लिखी सफलता की कहानी

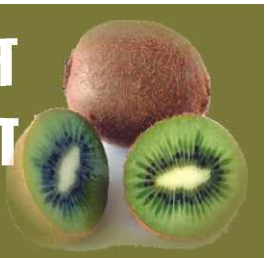

**कीवी उत्पादक बाट चैन सिंह का कहना है कि अभी कीवी का 250 क्विंटल ही उत्पादन कर रहा हूं। लक्ष्य 500 क्विंटल का है। विभाग का काफी सहयोग मिला। चार बागीचों में 1500 पौधे लगाए हैं।**

जिला चंबा के लोग नकदी फसलों व फलों की खेती कर आर्थिकी मजबूत कर रहे हैं। जिले के जम्मूहार क्षेत्र की बाट पंचायत के संडू गांव के पूर्व सैनिक 74 वर्षीय चैन लाल कीवी की खेती कर अच्छी-खासी कमाई कर रहे हैं। वह कीवी के 1500 पौधों से हर साल वर्ष 250 से 300 क्विंटल कीवी की पैदावार करते हैं और 17 से 18 लाख रुपये तक कमाते हैं।

कीवी की फसल हर वर्ष सितंबर से अक्टूबर के बीच तैयार होती है। उत्तर प्रदेश के व्यापारी हर साल यहां आकर चैन लाल से कीवी को 160 से 190 रुपये प्रति किलोग्राम के हिसाब से खरीदकर ले जाते हैं, इसलिए मंडी जाने का झंझट भी खत्म हो जाता है। पूर्व सैनिक ने 26 वर्ष पहले डा. वाईएस परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय सोलन से कीवी के 1700 रूपए में 35 पौधे खरीदे थे। इसके बाद उन्होंने स्वयं इन पौधों से कलम व बेल तैयार कर पौधों की संख्या को बढ़ाया। चैन लाल से प्रेरणा लेकर क्षेत्र के अन्य किसान भी कीवी की खेती करने लगे हैं। चैन लाल बताते हैं कि वर्ष 1992 में कीवी की खेती के बारे में पढ़ा था। उसके बाद इसको खेती करने का निर्णय लिया। शुरुआत में फसल बेचने में दिककतें आईं, लेकिन हौसला नहीं छोड़ा।

**कीवी की किस्में**

कीवी में नर और मादा फूल आते हैं। प्रमुख मादा किस्में है हेबर्ट, एबट, एलिसन, बनो और मोटी, जबकि नर किस्में हैं एलिसन और तमूरी। यहां एलिसम किस्म बेहतर पाई गई है, जिसमें फल अधिक लगते हैं और स्वाद में भी अच्छा है। कीवी के पौधों को अधिक सिंचाई की भी जरूरत नहीं पड़ती है। बंजर जमीन पर भी इसकी खेती की जा सकती है। देखभाल करने की भी अधिक जरूरत नहीं पड़ती। कीवी के पौधों को जंगली जानवर भी नुकसान नहीं पहुंचाते हैं।

**डेंगू व कैंसर रोग में लाभकारी कीवी**

कीवी फल की लोकप्रियता का श्रेय इसकी गुणवत्ता को जाता है। इसमें औषधीय गुणों का खजाना छिपा है। पकने पर इसका स्वाद मीठा और महक अच्छी होती है। इसमें प्रचुर मात्रा में विटामिन सी पाया जाता है। इसके अलावा फास्फोरस, कैल्शियम व पोटैशियम भी पाया जाता है। यह फल डेंगू, कैंसर के रोगियों, हृदय रोगियों के लिए काफी लाभदायक है।

**उपनिदेशक बागबानी चंबा प्रमोद शाह** ने कहा कि विभाग की ओर से चैन सिंह को पैकिंग एंड हाउस दिया गया है। इससे वह फलों की ग्रेडिंग कर पैकिंग करते हैं। हाउस पर बागवानी विभाग ने चार लाख रुपये खर्च किया है। विभाग से दो लाख रुपये का अनुदान मिला है। तकनीकी सलाह के साथ प्रशिक्षण भी दिया जाता है।◆◆◆

## बच्चों को पढ़ाएगा रोबोट, हिमाचल के इस स्कूल में पहला डिजिटल स्मार्ट क्लासरूम तैयार

हिमाचल प्रदेश के अधीन राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला कोटला में पहला रोबोट आइरिस क्लासरूम स्थापित हो गया है तथा अब बच्चों को रोबोट पढ़ाएगा। यह रोबोट आइरिस क्लासरूम आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस (एआई) के माध्यम से बच्चों को स्मार्ट शिक्षा की ओर ले जाएगा। इस रोबोट से प्रश्न पूछने पर यह स्मार्ट बोर्ड पर उसका जवाब देगा तथा बच्चे भी इससे काफी उत्साहित हैं। यह रोबोट आइरिस क्लासरूम इस स्कूल के संस्थापक स्वर्गीय दीवान संसार चंद भटनागर के पौत्र सुधीर कुमार कायस्था ने अपने दादा की स्मृति में एसएनके फाउंडेशन के माध्यम से 15 लाख रुपए की लागत से उत्तर भारत के पहले रोबोट आइरिस क्लासरूम का तोहफ़ा दिया। हिमाचल प्रदेश में यह पहला डिजिटल स्मार्ट क्लास रूम होगा। इस अवसर पर प्रधानाचार्य बबीता सहोत्रा ने कहा कि यह एक सुखद अनुभूति है कि बच्चों को शिक्षा में सुधार के लिए आधुनिक साधन उपलब्ध हुए हैं। उन्होंने संस्थान को यह नायाब तोहफा दान करने के लिए सुधीर कुमार कायस्था परिवार का आभार व्यक्त किया।◆◆◆

# कभी पेट भरने के लिए मांगी थी भीख

## अब एमबीबीएस कर डॉक्टर बनी धर्मशाला की पिंकी

जीवन में कठिनाइयों का सामना करना और उन्हें पार करना किसी भी व्यक्ति के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है, लेकिन अगर मन में कुछ कर गुजरने की चाह हो, तो कठिन से कठिन राह भी आसान हो जाती है। इस बात का सजीव उदाहरण पेश किया है धर्मशाला की पिंकी हरयान ने।

मैक्लोडगंज में मासूम पिंकी हरयान जब साढ़े चार साल की थी तब भगवान बुद्ध के मंदिर के पास अपनी मां के साथ पेट भरने के लिए भीख मांगती थी, लेकिन जीवन ने उन्हें एक नया मोड़ दिया, जब भगवान बुद्ध की करुणा और दया के अनुयायी तिब्बती शरणार्थी भिक्षु जामयांग ने भी मांगने और कूड़ा बीनने वाले बच्चों के साथ पिंकी को भी अपना बच्चा समझकर नई जिंदगी दी।

जामयांग ने उन्हें केवल सहारा नहीं दिया, बल्कि एक नई जिंदगी का अवसर भी प्रदान किया। टोंग-लेन चैरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक और निदेशक जामयांग ने पिंकी को 2018में चीन के एक प्रतिष्ठित मेडिकल विश्वविद्यालय में दाखिला दिलाया था। दरअसल, पिंकी एमबीबीएस की कठिन पढ़ाई पूरी कर डॉक्टर बन चुकी हैं। वहां से छह साल की एमबीबीएस की डिग्री पूरी करके अब वह धर्मशाला लौट आई हैं। अब ठीक 20 साल बाद पिंकी मरीजों की सेवा करने के लिए तैयार हैं। अब एक डॉक्टर के तौर पर मरीजों का इलाज करेंगी। हाल ही में धर्मशाला में आयोजित पत्रकार वार्ता में उन्होंने अपने संघर्ष और सफलता की कहानी साझा की। इस दौरान जामयांग भी उनके साथ रहे, जिन्होंने उनके जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस दौरान जामयांग ने बताया कि टोंग-लेन एक छोटी चैरिटी है, जो धर्मशाला के आसपास के इलाकों में विस्थापित भारतीय समुदायों के साथ काम करती है। ज्यादातर परिवार झुग्गी-झोपड़ियों में हताशा की स्थिति में रहते हैं। टोंग-लेन का उद्देश्य इन बेघर समुदायों को बुनियादी मानवाधिकारों तक पहुंच प्राप्त करने में मदद करना है। उन्होनें कहा कि दलाईलामा फाउंडेशन ने भी इस दिशा में महत्वपूर्ण मदद की है।◆◆◆

## मंडी की वसुधा कपूर न्यूयार्क में सम्मानित

मंडी की बेटी वसुधा कपूर को दुनिया के प्रतिष्ठित बान की मून पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। वसुधा कपूर को यह पुरस्कार न्यूयार्क में सोशल कैपिटल गाला इवेंट में प्रदान किया गया है।

वसुधा कपूर को यह पुरस्कार बान की मून पुरस्कार समारोह में पूर्व संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की मून, सोशल कैपिटल इनिटिएटिव्स की अध्यक्ष डॉ. गीता मेहता और अन्य सम्मानित गणमान्य अतिथियों सहित विशिष्ट अतिथियों के समक्ष प्रदान किया गया। बता दें कि वसुधा कपूर मंडी शहर की रहने वाली हैं और उन्होंने पढ़ाई पूरी करने के बाद 'मेरा गांव मेरी दुनिया' नाम एक एनजीओ की स्थापना की है। मंडी में जन्मी और पली बढ़ी वसुधा की यात्रा सामाजिक परिवर्तन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का एक प्रेरक प्रमाण है। डीएवी सीपीएस में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने और दिल्ली विश्वविद्यालय के लेडी इरविन कॉलेज से मास्टर कार्यक्रम में स्वर्ण पदक हासिल करने के बाद वसुधा कपूर अब मध्य प्रदेश में आम लोगों के लिए काम रही हैं। उन्हें यह सम्मान ग्रामीण मध्य प्रदेश में शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए जमीनी स्तर के नेतृत्व को बढ़ावा देने में उनके संगठन के असाधारण काम के लिए दिया गया है।◆◆◆

# राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
## का स्थापना के शताब्दी वर्ष में प्रवेश

-प्रह्लाद सबनानी-

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों एवं भारतीय समाज के लिए संघ की स्थापना का शताब्दी वर्ष में प्रवेश एक गर्व का विषय है। दरअसल, संघ के स्वयंसेवकों को समाज एवं राष्ट्र की सेवा के संस्कार संघ की शाखा में प्रदान किए जाते हैं। आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पूरे विश्व में सबसे बड़ा सांस्कृतिक एवं सामाजिक संगठन कहा जाने लगा है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना उस समय हुई थी, जब अंग्रेजों की दासता में भारतीय संस्कृति का सर्वनाश हो रहा था। इससे व्यथित होकर डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना विजयादशमी के पावन अवसर पर वर्ष 1925 में की थी। मार्च 2024 में संघ की नागपुर में आयोजित प्रतिनिधि सभा में उपलब्ध कराई गई जानकारी के अनुसार, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 922 जिलों, 6597 खंडों एवं 27,720 मंडलों में 73,117 दैनिक शाखाएं हैं, प्रत्येक मंडल में 12 से 15 गांव शामिल हैं। समाज के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में संघ की प्रेरणा से 40 से अधिक विभिन्न संगठन अपना कार्य कर रहे हैं जो राष्ट्र निर्माण तथा हिंदू समाज को संगठित करने में अपना योगदान दे रहे हैं। देश में राजनैतिक कारणों के चलते संघ पर तीन बार प्रतिबंध भी लगाया गया है – वर्ष 1948, वर्ष 1975 एवं वर्ष 1992 में – परंतु तीनों ही बार संघ पहले से भी अधिक सशक्त होकर भारतीय समाज के बीच उभरा है। और संघ ने विश्व समुदाय का ध्यान भी अपने विचारधारा और क्रियाकलापों के आधार पर अपनी ओर आकर्षित किया है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार 'एक सही अर्थों में हिंदू संगठन अत्यंत आवश्यक है जो हिंदुओं को परस्पर सहयोग और सराहना का भाव सिखाए'।

स्वामी विवेकानंद के इस विचार को डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार ने व्यवहार में बदल दिया। उनका मानना था कि हिंदुओं को एक ऐसे कार्य दर्शन की आवश्यकता है जो इतिहास और संस्कृति पर आधारित हो, जो उनके अतीत का हिस्सा हो और जिसके बारे में उन्हें कुछ जानकारी हो। संघ की शाखाएं 'स्व' के भाव को परिशुद्ध कर उसे एक बड़े सामाजिक और राष्ट्रीय हित की भावना में मिला देती हैं। वस्तुत: यह कह सकते हैं कि हिंदू राष्ट्र को स्वतंत्र करने व हिंदू समाज, हिंदू धर्म और हिंदू संस्कृति की रक्षा कर राष्ट्र को परम वैभव तक पहुंचाने के उद्देश्य से डॉक्टर साहब ने संघ की स्थापना की। आज संघ का केवल एक ही ध्येय है कि भारत को पुन: विश्व गुरु के रूप में स्थापित करना।

संघ के संस्थापक डॉक्टर हेडगेवार जी की दृष्टि हिंदू संस्कृति के बारे में बहुत स्पष्ट थी एवं वे इसे भारत में पुन: प्रतिष्ठित कराना चाहते थे। डॉक्टर साहब के अनुसार, 'हिंदू संस्कृति हिंदुस्तान का प्राण है। अतएव हिंदुस्तान का संरक्षण करना हो तो हिंदू संस्कृति का संरक्षण करना हमारा पहला कर्त्तव्य हो जाता है। क्योंकि राष्ट्र जमीन के टुकड़े का नाम तो नहीं है। यह बात एकदम सत्य है। फिर भी हिंदू धर्म तथा हिंदू संस्कृति की सुरक्षा एवं प्रतिदिन विधर्मियों द्वारा हिंदू समाज पर हो रहे विनाशकारी हमलों का सामना करने के लिए इस अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की आवश्यकता है। जिस खंडकाल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना हुई थी वह मुस्लिम तुष्टिकरण का काल था। वर्ष 1920 में देश में खिलाफत आंदोलन शुरू हुआ। मुसलमानों का नेतृत्व मुल्ला-मौलवियों के हाथों में था। इस खंडकाल में मुसलमानों ने देश में अनेक दंगे किए। केरल में मोपला मुसलमानों ने विद्रोह किया। उसमें हजारों हिंदू मारे गए। मुस्लिम आक्रांताओं के आक्रमण के कारण हिंदुओं में अत्यंत असुरक्षिता की भावना फैली थी। हिंदू संगठित हुए बिना मुस्लिम आक्राताओं के सामने टिक नहीं सकेंगे, यह विचार अनेक लोगों ने प्रस्तुत किया और इस प्रकार हिंदू हितों के रक्षार्थ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना हुई। संघ के प्रयासों से भारत में विस्मृत राष्ट्रभाव का पुनर्जागरण प्रारम्भ हुआ। स्वामी विवेकानंद ने वेदांत के आधार पर सार्वभौम हिंदुत्व का प्रचार किया। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, राजनारायण बोस, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, योगी अरविंद, डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार जैसे हिंदू हितचिंतकों ने विश्व के समक्ष यह संदेश दिया कि हिंदुस्तान में राष्ट्रीय एकता का आधार हिंदू धर्म है और स्वयं हिंदू एक धर्म प्रधान एवं प्रकृति के सार्वभौमिक सिद्धांतों पर आधार जीवन पद्धति है।◆◆◆

# बांग्लादेश में दुर्गा पूजा पर प्रतिबंध

## हिंदू समुदाय पर हमले और मूर्तियां तोड़ी गईं

# हिन्दुओं का विरोध प्रदर्शन जारी

बांग्लादेश में हिंदू समुदाय के खिलाफ बढ़ती हिंसा और दुर्गा पूजा पर प्रतिबंध की घटनाएं सामने आ रही हैं। हाल ही में बांग्लादेश के विभिन्न हिस्सों में दुर्गा पूजा मनाने की अनुमति नहीं दी गई है और कई स्थानों पर मां दुर्गा की प्रतिमाएं तोड़ी गई हैं। बांग्लादेश की वर्तमान मोहम्मद यूनुस सरकार के इस फैसले से हिंदू समुदाय में भारी आक्रोश है। बांग्लादेश के कई जिलों से दुर्गा पूजा के आयोजन को लेकर तनाव की खबरें आ रही हैं। हाल ही में किशोरगंज के बत्रिश गोपीनाथ जीउरखड़ा में दुर्गा प्रतिमा को तोड़ा गया, वहीं कोमिला जिले में भी नवनिर्मित प्रतिमा को नुकसान पहुँचाया गया और मंदिर के दान पात्र को लूट लिया गया। इसी तरह, नारायण जिले के मीरापारा में कट्टरपंथियों ने दुर्गा मंदिर पर हमला कर दिया।

### सुरक्षा का हवाला, लेकिन 'जजिया कर' का दबाव

यूनुस सरकार और मुस्लिम संगठनों ने सुरक्षा का हवाला देते हुए दुर्गा पूजा की अनुमति नहीं दी है, और जिन पूजा समितियों को परमिशन दी गई है, उन्हें नमाज के दौरान शांति बनाए रखने के सख्त निर्देश दिए गए हैं। इस बीच, पूजा समितियों से 5 लाख रुपये प्रति पंडाल 'जजिया कर' के रूप में देने की मांग की जा रही है, जिसके चलते कई समितियों ने पूजा का आयोजन रद्द कर दिया है।

### राजनीतिक तनाव और भारत से बिगड़ते रिश्ते

यह घटनाएं तब सामने आ रही हैं जब हाल ही में बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने पांच प्रमुख राजदूतों को वापस बुलाने का आदेश दिया है, जिनमें भारत के राजदूत भी शामिल हैं। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की कुर्सी जाने के बाद से देश की राजनीति में उथल-पुथल मची हुई है, और भारत के साथ संबंधों में भी तनाव आ रहा है। माना जा रहा है कि बांग्लादेश में 5 अगस्त को हुए बवाल के बाद शेख हसीना को कुर्सी छोड़नी पड़ी थी और वह फिलहाल भारत में रह रही हैं।

### हिंदू समुदाय में भय और असुरक्षा

बांग्लादेश के हिंदू समुदाय के खिलाफ बढ़ती हिंसा और धार्मिक असहिष्णुता ने वहां के अल्पसंख्यकों में भय का माहौल पैदा कर दिया है। दुर्गा पूजा न केवल एक धार्मिक त्योहार है, बल्कि यह हिंदू समुदाय की आस्था का प्रतीक भी है। दुर्गा प्रतिमाओं को तोड़ने और पूजा पर प्रतिबंध लगाने की घटनाओं से वहां के हिंदुओं में गहरा आक्रोश और असुरक्षा की भावना है। बांग्लादेश में दुर्गा पूजा को लेकर उठे विवाद ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी ध्यान खींचा है। हिंदू समुदाय की धार्मिक स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाने और मूर्तियों को तोड़ने की घटनाएं देश के भीतर सांप्रदायिक तनाव को और बढ़ा सकती हैं। ऐसे में भारत और बांग्लादेश के रिश्तों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा, यह देखने वाली बात होगी।◆◆◆

## हिन्दूस्तान में भी दुर्गा पूजा पर साम्प्रदायिक तनाव

भारत में भी दुर्गा पूजा के दौरान कई स्थानों पर साम्प्रदायिक तनाव और हिंसा की घटनाएँ सामने आईं। उत्तर प्रदेश के बलरामपुर में इस्लामी कट्टरपंथियों ने पूजा पंडाल में घुसकर महिलाओं से अभद्रता की और भगवा ध्वज को अपमानित किया। आरोपी कलीम, अरबाज़, इमरान और मुख्तार पर पंडाल में तोड़फोड़ का आरोप है। वहीं, गोंडा में आतिशबाजी को लेकर विवाद हुआ, जहाँ असलम, सुल्तान और मुन्ना की अगुवाई में पथराव किया गया। कुशीनगर में दुर्गा पूजा के दौरान मूर्ति पर पथराव की घटना भी सामने आई।

कोलकाता में, अजान के दौरान माइक की आवाज बंद करने की माँग को लेकर विवाद खड़ा हुआ। इसी तरह असम के करीमगंज में पथराव के बाद सांप्रदायिक झड़पें हुईं, जहाँ पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर स्थिति को नियंत्रित किया। ये घटनाएँ धार्मिक असहिष्णुता की बढ़ती समस्या को उजागर करती हैं, जिस पर सख्त कार्रवाई की जरूरत है।◆◆◆

कृषि विभाग इन दिनों प्रदेश भर में विशेष अभियान चला रहा है। 'मेरी पॉलिसी मेरे हाथ' अभियान के तहत कृषि विभाग किसानों को उनकी फसल बीमा पॉलिसी दे रहा है। 31 अक्तूबर तक चलने वाला यह अभियान हर गांव तक पहुंचेगा। आजादी का अमृत महोत्सव इंडिया-75 अभियान के अंतर्गत घर-घर वितरण अभियान मनाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत प्रदेश के सभी किसानों को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना के बारे में जागरूक किया जाएगा।

इस कार्यक्रम की जानकारी देते हुए कृषि निदेशक कुमद सिंह ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा किसानों के लिए चलाई जा रही महत्त्वाकांक्षी योजना प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत फसल बीमा पॉलिसी वितरण अभिमान मेरी पॉलिसी, मेरे हाथ का शुभारंभ 20 फरवरी, 2022 को किया था, जिसका उद्देश्य देशभर के उन किसानों तक प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का पॉलिसी दस्तावेज पहुंचाना है, जिन्होंने यह बीमा लिया है। इसमें किसानों के बीमा से जुड़े दस्तावेज दिए जाते हैं। इससे पहले उनके पास बीमा का कोई पुख्ता सबूत नहीं होता था केवल एक ही रसीद दी जाती थी जिसके माध्यम से किसानों को अपनी फसल के नुकसान का दावा करने में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता था। इस आयोजन के दौरान सभी जिलों में कृषि विभाग के अधिकारी तथा कृषि बीमा कंपनी के प्रतिनिधि उपस्थित रहेंगे।

### खरीफ की फसल पर दो, रबी पर 1.5 फीसदी प्रीमियम दर

कृषि विभाग द्वारा संभावित क्षेत्रों में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत खरीफ मौसम में मक्की व धान तथा रबी मौसम में गेहूं तथा जौ की फसलें सम्मिलित की गई है। इसके अंतर्गत किसानों के लिए प्रीमियम की दर खरीफ में दो फीसदी तथा रबी के मौसम में 1.5 फीसदी है। पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना में खरीफ मौसम में आलू, टमाटर, अदरक, मटर, बंदगोभी तथा गोभी और रबी मौसम में आलू, टमाटर लहसून तथा शिमला मिर्च सम्मिलित की है। इस अंतर्गत किसानों के लिए प्रीमियम की दर खरीफ व रबी दोनों मौसम में पांच फीसदी रखी गई है।

### योजना के तहत अब तक 17,94,574 किसान कवर

कृषि निदेशक ने बताया कि इस योजना के अंतर्गत खरीफ 2018से अब तक खरीफ 2024 तक कुल कवर किए गए किसानों की संख्या 17,94,574 तथा लाभान्वित किसानों की संख्या 5,40,621 है। इन दोनों योजनाओं में किसानों को 2016से लेकर अभी तक 105.59 करोड़ रुपए क्षतिपूर्ति के रूप में दिए हैं।◆◆◆

## मोदी सरकार ने रबी की छह फसलों के एमएसपी में की वृद्धि

केंद्र सरकार ने बुधवार को रबी की 6 फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में बढ़ोतरी की घोषणा की है। गेहूं की एमएसपी में 150 रुपये प्रति क्विंटल की वृद्धि की गई है, जिससे अब यह 2,425 रुपये प्रति क्विंटल हो गई है। इसके साथ ही, जौ, चना, मसूर, सरसों और कुसुम की एमएसपी में भी वृद्धि की गई है।

जौ की एमएसपी में 130 रुपये का इजाफा कर इसे 1,950 रुपये प्रति क्विंटल किया गया है, जबकि चने की एमएसपी 210 रुपये बढ़ाकर 5,650 रुपये कर दी गई है। मसूर की एमएसपी 275 रुपये बढ़ाकर 6,700 रुपये प्रति क्विंटल की गई है। सरसों की एमएसपी 300 रुपये की बढ़ोतरी के साथ 5,950 रुपये हो गई है, और कुसुम की एमएसपी 140 रुपये की वृद्धि के साथ 5,940 रुपये प्रति क्विंटल हो गई है। केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में लिए गए इस अहम निर्णय से किसानों को राहत मिलेगी।

## तेरा वैभव अमर रहे मां !

जो मजदूरी करने आए, वो मालिक बन बैठे हैं।
जो आंगन में सिमट गए, वो फिर भी अकड़े बैठे हैं।।
ऐसी करनी करते रहे पहले भी, कई बार लुटते रहे।
अंग्रेजों चंगेजों के जो मित्र थे, बार-बार यहाँ मिटते रहे।।
पहले था सब जगह पसारा, चक्रवर्ती था राज हमारा।
रामायण में भी थी हमारी, था महाभारत भी हमारा।।
महाभारत के धर्म युद्ध में, कौरव पांडव युद्ध हुआ।
श्री कृष्ण शांतिदूत बने पर, समझौता फिर भी न हुआ।।
महा विनाश हुआ भारत में, अस्त्र शस्त्र सब नष्ट हुए।
आपसी फूट की नींव पड़ी, कलियुग में अति भ्रष्ट हुए।।
सोने की चिड़िया को लूटा, मुगलों चंगेजों-अंग्रेजों ने।
दरार डाली दो धर्मों में, कपटी इन अंग्रेजों ने।।
आजादी के जश्न से पहले, पाक मुल्क हुआ आबाद।
आधी अधूरी आजादी में, बढ़ता गया विवाद।।
अंग्रेजों से मिली आजादी, अंग्रेजीयत फिर भी बनी रही।
फिर देसी अंग्रेजों ने लूटा, मानसिक गुलामी बनी रही।।
बस खा पीकर कर सोते रहे, धीरे-धीरे सब खोते गए।
धर्म भी त्यागा, शासन छोड़ा, फूट के बीज बोते रहे।।
अब फिर देश के गद्दारों ने, भारत को ललकारा है।
भारत माता की पावनता, एक ही धर्म हमारा है।।
अबकी चूके, तो मिट जाओगे,
सिर तन से जुदा, हो कट जाओगे।
चारों ओर समुंदर है अब, कहीं नहीं तुम हट पाओगे।।
उठो हिंदुओं आलस छोड़ो, आपस में सब मिल एक हो
हम सब हिन्दु हैं, चाहे जातियाँ अनेक हो
हिंदू वीरो! तुम्हें कसम है, वीर शिवा प्रताप की।
रक्षा अब करनी होगी, मातृभूमि की लाज की।।
हिंदू धर्म की बलि बेदी पर, अपना शीश चढ़ाना होगा।
तेरा वैभव अमर रहे मां, नारा उद्घोष में बढ़ाना होगा।।

**डा. कर्म सिंह**

## लोक कलाकारों को दे दो सम्मान

लोक संस्कृति को बचाने के लिए ज़िन्दगी
दाव पर लगा देते हैं असली लोक कलाकार
जिन्हें लोक संस्कृति से नहीं कोई मतलब
वही बाहरी कूटते हैं पैसा और हो जाते हैं फरार
किसी का चुराया गाना
धुन किसी की चुराई
इधर उधर से जोड़े गाने के तार
अपनी वाहवाही करवाई
कैसे बचेगी लोक संस्कृति
जब रहा नहीं किसी को प्यार
न अपनी बोली से रहा कोई मतलब
न रहा अपनापन बदल गया व्यवहार
पाश्चात्य सभ्यता में रंग गए सभी
लुप्त हो गए लोकगीत और गीतकार
वाद्य यंत्र पुराने अब बन्द हैं पड़े
निकलती थी तरंगे टूटे पड़े है अब वह तार
जब तक लोक कलाकारों को नहीं मिलेगा सम्मान
मौका नहीं देंगे तो कैसे बनेगी उनकी पहचान
परों को तो खोल कर देखो उनके एक बार
ऐसी उड़ान होगी कि मुट्ठी में होगा आसमान

**रवींद्र कुमार शर्मा, घुमारवीं, जिला बिलासपुर हि प्र**

## .....रुकना मत

**हे पथिक ध्येय पथ पर बढ़ते हुए रुकना मत,**
**आंधी का सीना चीरकर बढ़ना रुकना मत।**
**मार्ग मे दलदल भी है धंसना मत,**
**एषणाओं के जाल बिखरे है फंसना मत।**
**मोह में लगाव में किसी के प्रभाव मे मत आना,**
**ले अक्षय ध्येयनिष्ठा उर में बस तुम डट जाना।**
**परिश्रम तेरा धर्म है, पुरुषार्थ तेरा कर्म है,**
**पथ के कंटको को कुचल कर बढ़ना झुकना मत,**
**हे पथिक ध्येय पथ पर बढ़ते हुए रुकना मत।**
**इस पथ पर चलने हेतु ही हुआ तेरा उद्भव है,**
**पथ का अंतिम लक्ष्य,भारत का परम् वैभव है।**
**तू लक्ष्य प्रेरित बाण है चूकना मत,**
**हे पथिक ध्येय पथ पर बढ़ते हुए रुकना मत।**

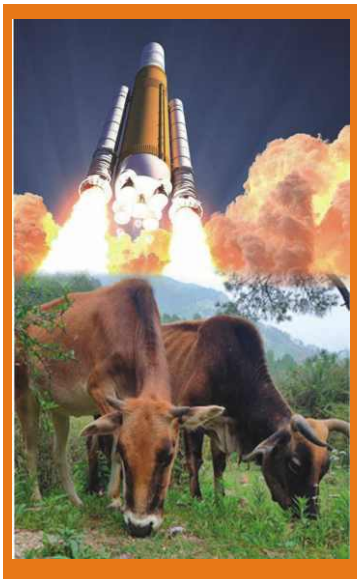

# गाय के गोबर से जापान में चला जहाज, रॉकेट उड़ाने की तैयारी

हमारे देश में गाय को मां का दर्जा दिया गया है। इसके पंचगव्यों में से एक गोबर को अब तक सिर्फ खेतों में खाद व कंडों के रूप में जलाने के लिए काम में लिया जाता था, लेकिन अब दुनियाभर में गाय के गोबर की उपयोगिता सिद्ध हो चुकी है। दुनिया में बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए भी गोबर बहुत कारगर साबित हो रहा है। कई देशों में इससे बिजली बनाई जा रही है। जापान तो गोबर की ऊर्जा से पानी में चलने वाले जहाज का सफल परीक्षण भी कर चुका है। यह उन लोगों की आंखें खोलने के लिए काफी है जो हिन्दुओं की संस्कृति का मजाक बनाते हैं और गाय को एक साधारण पशु मानकर इसका वध कर रहे हैं व गोबर को मात्र एक अपशिष्ट बता रहे हैं।

**गोबर का उपयोग और उसके लाभ :** गाय के गोबर का उपयोग पहली बार भारत में किया गया था। किसान अपने खेतों को उपजाऊ बनाए रखने और अच्छी फसलों के खाद के रूप में इसे काम में लेते थे। इसके अलावा गोबर से घर-आंगन की लिपाई भी की जाती थी। साथ ही विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का निर्माण भी होता था। इसके बाद गोबर का उपयोग बायोगैस के रूप में होने लगा। गोबर गैस प्राकृतिक गैस और अन्य जीवाश्म ईंधन का एक पर्यावरण-अनुकूल विकल्प है। यह ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने में सहायता कर सकता है, साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में ऑफ-ग्रिड घरों के लिए स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों तक पहुंच बढ़ा सकता है। गोबर में बहुत बड़ी मात्रा में ऊर्जा होती है।

## जापान ने गोबर की ऊर्जा से किया जहाज का सफल परीक्षण

गोबर की लोकप्रियता न केवल विकासशील देशों बल्कि दुनिया भर में बढ़ रही है। इसका सबसे बड़ा उदहारण जापान है, जहां गोबर की ऊर्जा से पानी पर चलने वाले जहाज का सफल परीक्षण किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त जापान गाय के गोबर का प्रयोग रॉकेट के ईंधन के तौर पर करने की भी तैयारी कर रहा है। जापान की स्पेस इंडस्ट्री ने एक प्रोटोटाइप रॉकेट इंजन का परीक्षण किया है, जिसका ईंधन गाय के गोबर से तैयार किया गया है। इस रॉकेट को बायोमीथेन से उड़ाया गया है, जो गोबर से निकलने वाली एक गैस है। इंटरस्टेलर टेक्नोलॉजीज के मुख्य कार्यकारी ताकाहिरो इनागावा ने बताया कि इसमें प्रयुक्त बायोमीथेन पूरी तरह से दो स्थानीय डेयरी फार्मों में गाय के गोबर से उत्पन्न की गई थी। इनागावा ने कहा, हम ऐसा सिर्फ इसलिए नहीं कर रहे हैं क्योंकि यह पर्यावरण के लिए अच्छा है, बल्कि इसलिए कर रहे हैं कि इसे स्थानीय स्तर पर उत्पादित किया जा सकता है। यह बहुत किफायती है और अच्छे प्रदर्शन व शुद्धता वाला ईंधन है। हम ऐसा करने वाले पहले निजी व्यवसायी हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह मान लेना अतिश्योक्ति होगी कि इसे पूरी दुनिया में दोहराया जाएगा। मैं कह सकता हूं कि आने वाले समय में इसका अधिक प्रयोग देखा जा सकता है। गोबर से रॉकेट उड़ाने वाली इंटरस्टेलर टेक्नोलॉजीज और एयर वॉटर फर्म का मानना है कि आने वाले समय में इस ईंधन का प्रयोग करके अंतरिक्ष में सैटेलाइट भी स्थापित किए जा सकेंगे। एयर वाटर के एक इंजीनियर टोमोहिरो निशिकावा ने कहा कि जापान के पास संसाधनों की कमी है, ऐसे में उसे घरेलू स्तर पर उत्पादित, कार्बन-न्यूट्रल ऊर्जा को सुरक्षित करना चाहिए। इस क्षेत्र की गायों से मिलने वाले गोबर में बहुत संभावनाएं हैं।

## ब्रिटेन के किसानों ने गोबर से बनायीं बैटरियां

ब्रिटिश किसानों के एक समूह के अनुसार, उन्होंने गाय के गोबर से ऐसा पाउडर तैयार किया गया है, जिससे बैटरियां बनाई गई हैं। गाय के एक किलोग्राम गोबर से ब्रिटेन के किसानों ने इतनी बिजली तैयार कर ली है कि उससे 5 घंटे तक वैक्यूम क्लीनर चलाया जा सकता है। ब्रिटेन के आर्ला डेयरी ने इन बैटरी को काउ बैटरी का नाम दिया है। ◆◆◆

## श्री गुरुराज जी का पाँच दिवसीय प्रवास

# ग्राम विकास की दिशा में नई ऊर्जा

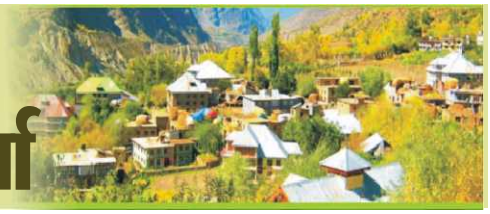

हिमाचल प्रदेश के विभिन्न गाँवों में ग्राम विकास के अखिल भारतीय संयोजक श्री गुरुराज जी का पाँच दिवसीय प्रवास हुआ। इसका मुख्य उद्देश्य गाँवों में स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, सामूहिकता, और स्वावलंबन को बढ़ावा देना था। प्रवास की शुरुआत 9 और 10 सितम्बर को ऊना जिले के चौकी मनियार गाँव से हुई, जहाँ एक ग्राम सभा का आयोजन किया गया। सभा का शुभारंभ दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ और गाँव के होनहार विद्यार्थी मंजीत को 95 प्रतिशत अंक प्राप्त करने के लिए सम्मानित किया गया। गाँव की प्रमुख विशेषताओं में पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण और जल संरक्षण हेतु तालाबों का निर्माण शामिल है। गाँव में एक विशाल मंदिर है जहाँ वर्ष में दो बार भागवत कथा और भंडारे का आयोजन होता है। साथ ही, गाँव में तीन परिवार जैविक खेती करते हैं और दो गौशालाएँ हैं। पशुपालन, बकरी पालन, और मछली पालन में गाँव के 50 प्रतिशत परिवार संलग्न हैं। सुरक्षा की दृष्टि से गाँव में सुरक्षा समिति का गठन हुआ है, और गाँव में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा भी चलती है। श्री गुरुराज जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि किसी भी कार्य को करने के लिए स्वस्थ शरीर और मन का होना आवश्यक है। उन्होंने अमेरिका की तुलना में भारतीय ग्रामीण जीवन की प्रशंसा की, जहाँ शांति, स्वच्छता और सामूहिकता का महत्व है।

### भालत गाँव का अनुकरणीय विकास : सामूहिकता और सेवाभाव का अद्वितीय उदाहरण

10 और 11 सितम्बर को श्री गुरुराज जी का प्रवास हमीरपुर जिले के भालत गाँव में हुआ। इस गाँव की विशेषता यह है कि यहाँ के लोग परिश्रमी, ईमानदार और सेवाभावी हैं। श्री गुरुराज जी ने ग्रामवासियों को संबोधित करते हुए गाँव की प्रामाणिकता और सामूहिकता की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि भालत गाँव में आज भी लोग वही करते हैं जो वे बोलते और सोचते हैं, जो इसे एक आदर्श गाँव बनाता है। कोरोना महामारी के दौरान, इस गाँव का कोई भी व्यक्ति शहर की ओर नहीं गया, बल्कि लोग गाँव की शुद्ध हवा, स्वच्छ पेयजल और स्वस्थ वातावरण के कारण यहाँ आकर सुरक्षित महसूस कर रहे थे। गाँव में रामलीला का आयोजन, छिंज (कुश्ती) मेला और भंडारे जैसे धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। भालत गाँव ने किन्नर समाज के लिए मन्दिर हेतु जमीन दान की, जहाँ भव्य मन्दिर का निर्माण हुआ है। इस मन्दिर में हनुमान चालीसा का पाठ हर मंगलवार होता है। गाँव में 50 प्रतिशत परिवार पशुपालन करते हैं, और पर्यावरण संरक्षण के लिए हर वर्ष वृक्षारोपण किया जाता है। गाँव में निशुल्क ट्यूशन सेंटर भी खोला गया है, जो बच्चों की शिक्षा में सहायक है। कार्यक्रम में 50 पुरुष और 40 मातृशक्ति उपस्थित रही, और इसके पश्चात ग्राम समिति की बैठक हुई जिसमें आगामी कार्यक्रम तय किए गए।

### बरोटा गाँव : समरसता और ग्राम विकास की नई दिशा

11 और 12 सितम्बर को बिलासपुर जिले के बरोटा गाँव में 'मातृशक्ति की ग्राम विकास में भूमिका' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गाँव की मातृशक्ति ने भजन-कीर्तन के साथ अपनी बातें रखीं। बरोटा गाँव में 13 जातियाँ निवास करती हैं, और उनमें अच्छा सामंजस्य है। गाँव में बने शिव मंदिर की नक्काशी गाँव के ही निवासी श्री ललित जी ने की, जिसे निशुल्क किया गया और इसके लिए उन्हें 21000 रुपये और शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। गाँव में मोमबत्ती निर्माण का उद्योग स्थापित है, जिसमें विभिन्न प्रकार की मोमबत्तियाँ बनाई जाती हैं। इसके अलावा, हिमाचल शिक्षा समिति के माध्यम से संचालित विद्यालय बच्चों को संस्कारयुक्त शिक्षा प्रदान करता है। ग्राम समिति की बैठक में श्री गुरुराज जी ने बरोटा गाँव को आदर्श गाँव की दिशा में बढ़ते हुए बताया और कहा कि गाँव को अपराध, संघर्ष, व्यसन, ऋण, और भेदभाव मुक्त बनाना होगा। इसके लिए चरणबद्ध योजना के तहत काम करने की आवश्यकता है। इस प्रवास के दौरान, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय विभाग संघचालक शान्ति स्वरूप जी ने कहा कि गाँवों का विकास करना ही भारत का विकास है। 2025 में संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूरे होने पर पाँच महत्वपूर्ण परिवर्तन - सामाजिक समरसता, परिवार प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, नागरिक कर्तव्य बोध और जीवन में स्वत्व का पालन - के आधार पर गाँवों में काम करना आवश्यक होगा।

## .....जब कुली बनें टॉलस्टॉय

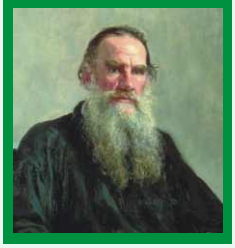

रूस के प्रसिद्ध कथाकार टालस्टाय एक बार कहीं जाने के लिए स्टेशन पर खड़े थे। उन्होंने साधारण कपड़े पहने हुए थे इसलिए एक महिला ने उनको कुली समझ लिया और अपना सामान उठाकर एक होटल तक पहुंचाने के लिए कहा। टॉलस्टॉय महिला की बात सुनकर उसके सामने जाकर खड़े हो गए। महिला ने तुरंत उन्हें अपना सामान उठाकर एक का पता लिख कर दिया और कहा कि यह सामान होटल में उसके पति को पहुंचा दे। बिना कुछ कहे उस महिला का सामान उठाया और बताए गए पते पर उसके पति को पहुंचा दिया। जब सामान छोड़कर टालस्टाय वापस आए तो उसे महिला ने उन्हें मजदूरी के रूप में दो कोपैक दे दिए। टालस्टाय ने उन्हें जेब में रख लिया।

थोड़ी देर बाद कुछ लोग टॉलस्टाय को विदाई देने के लिए स्टेशन पर आए और उन्हें फूल मालाओं से लाडदकर सम्मान सहित विदा करने लगे। यह दृश्य देखकर महिला अत्यंत आश्चर्यचकित हुई। उसने लोगों से पूछा तो पता चला कि यह रूस के महान लेखक टालस्टाय हैं। अब उस महिला को अपने व्यवहार पर शर्मिंदगी महसूस हो रही थी। वह संकोच करती हुई टॉलस्टॉय के पास गई और क्षमा मांगी तथा उनसे निवेदन किया कि उसने दो कोपैक देकर उन्हें एक मजदूर समझा और इतनी छोटी सी राशि देकर उनका अपमान किया है। महिला की यह बात सुनकर टॉलस्टॉय हंस पड़े। उन्होंने तुरंत उस महिला से कहा कि दो कोपैक तो मेरे पसीने की गाढी कमाई है। मैंने मेहनत की। आपका सामान छोड़ा और उसके बदले में आपने मुझे यह मजदूरी दी है। तो यह राशि तो मैं आपको वापस नहीं देने वाला। यह दृश्य देखकर वहां खड़े टॉलस्टॉय के प्रशंसकों के चेहरे पर हंसी की लहर दौड़ गई और वह महिला भी टॉलस्टॉय की इस महानता को देखकर बहुत प्रसन्न हुई।◆◆◆

## प्रश्नोत्तरी

1. भारत का राष्ट्रीय वृक्ष कौन है ?
   (क) पीपल (ख) बरगद (ग) देवदार
2. भारत का राष्ट्र प्रमुख कौन है ?
   (क) राष्ट्रपति (ख) प्रधान मंत्री (ग) गृह मंत्री
3. अयोध्या किस नदी के पट पर स्थित है ?
   (क) गोमती (ख) सरयू (ग) नर्मदा
4. सर्वप्रथम किस देवता की पूजा होती है?
   (क) गणेश जी (ख) ब्रह्म जी (ग) विष्णु जी
5. भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे?
   (क) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (ख) महात्मा गांधी (ग) जवाहर लाल नेहरू
6. विवेकानन्द जी का बचपन का क्या नाम था ?
   (क) धर्मेन्द्र (ख) नरेन्द्र (ग) सुरेन्द्र
7. स्वर्ण मन्दिर किस स्थान पर स्थित है?
   (क) अमृतसर (ख) जालंधर (ग) लुधियाना
8. कौन सी नदी दक्षिण गंगा नाम से प्रसिद्ध है ?
   (क) गोदावरी (ख) कृष्णा (ग) गंगा
9. स्वतंत्रता दिवस कब मनाया जाता है ?
   (क) 15 अगस्त (ख) 26 जनवरी (ग) 2 अक्तूबर
10. किस ग्रह को लाल ग्रह के नाम से जाना जाता है?
    (क) मंगल (ख) शुक्र (ग) बुध

**उत्तर** : 1. (ख-3) 2. (ख-इसके पानी के कारण) 3. (क-लगभग 15 करोड़ कि.मी. ) 4. (ख-मोर) 5. (क-कछुआ) 6. (ख-आगरा) 7. (ख-जवाहरलाल नेहरू) 8. (ख-जन गण मन) 9. (ग-बृहस्पति) 10 (क-मंगल)

## चुटकुले

**टीचर:** तुम स्कूल क्यों नहीं आए ?

**बच्चा :** मैम, मैं सपना देख रहा था कि स्कूल गया हूँ। **टीचर :** फिर ?

**बच्चा :** फिर मैं सोच रहा था, सोने दो, सपना ही तो है !

◆◆◆

**मोनू:** क्या तुम जानते हो कि पेड़ कैसे चलते हैं ? **सोनू:** नहीं, कैसे ?

**मोनू:** हवा के साथ-साथ !

◆◆◆

**टीचर:** हवा को पकड़ा क्यों नहीं जा सकता ?

**बच्चा :** क्योंकि वो भाग जाती है !

◆◆◆

**बबलू :** तुमने फ्रिज का दरवाजा क्यों खोला ?

चुलबुल: मैं देख रहा था कि कोल्ड ड्रिंक ठंडी हो रही है या नहीं !

◆◆◆

**मम्मी:** बेटा, तुम दिनभर टीवी क्यों देखते रहते हो ?**पप्पू:** मम्मी, टीवी देखना मेरी आँखों के लिए अच्छा है। **मम्मी :** वो कैसे ?**पप्पू:** क्योंकि जब आप गुस्सा होती हैं, तो मुझे आपकी नजरें नहीं देखनी पड़तीं !

**प्रचालनाधीन परियोजनाएं:**

- 1500 मेगावाट नाथपा झाकड़ी जल विद्युत स्टेशन
- 412 मेगावाट रामपुर जल विद्युत स्टेशन
- 47.6 मेगावाट खिरवीरे पवन विद्युत स्टेशन
- 5.6 मेगावाट चारंका सौर पीवी विद्युत स्टेशन
- 50 मेगावाट साडला पवन विद्युत स्टेशन
- एनजेएचपीएस में 1.31 मेगावाट ग्रिड कनैक्टिड सौर विद्युत स्टेशन
- 75 मेगावाट परासन सौर विद्युत स्टेशन
- 400 केवी, डी/सी क्रास बार्डर ट्रासमिशन लाईन (भारतीय हिस्सा)

**विकासाधीन परियोजनाएं:**

- भारत के विभिन्न राज्यों में जल विद्युत परियोजनाएं
- नेपाल में जल परियोजनाएं
- बिहार में ताप परियोजना
- भारत के विभिन्न राज्यों में सौर विद्युत परियोजनाएं
- ट्रांसमिशन लाइनों का निष्पादन

**एसजेवीएन लिमिटेड**

**SJVN Limited**

(भारत सरकार एवं हिमाचल प्रदेश सरकार का संयुक्त उपक्रम)
एक 'मिनी रत्न' एवं शेड्यूल 'ए' पीएसयू। एक आईएसओ 9001:2005 प्रमाणित कम्पनी

**पंजीकृत कार्यालय** : एसजेवीएन लिमिटेड, शक्ति सदन, कॉरपोरट मुख्यालय, शनान, शिमला-171006, हिमाचल प्रदेश (भारत)
**एक्सीपीडाइटिंग कार्यालय** : ऑफिस ब्लाक, टॉवर-1, 6वीं मंजिल, एनबीसीसी कॉम्पलैक्स, ईस्ट किदवई नगर, नई दिल्ली-110023 (भारत)
**वेबसाइट** : www.sjvn.nic.in



**कार्यालय**

**मातृवन्दना ( मासिक )**

डा. हेडगेवार भवन, द्वितीय तल नाभा हाउस,
शिमला-171004, हिमाचल प्रदेश
दूरभाष : 0177-2836990,
मोबाइल : 7650000990


सेवा में


**मातृवन्दना** प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेस - 9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित।



follow us on : YouTube